राजकीय कन्या महाविद्यालय

सेक्टर–14, गुरुग्राम (हरियाणा)

GOVERNMENT COLLEGE FOR GIRLS
SECTOR - 14 GURUGRAM

रमणीक

सत्रः 2022–2023

EDITORIAL BOARD

Sitting Row (Left to Right) Dr. Amitesh Boken (Editor-in-Chief & Editor of Hindi Section)
Dr. Jitender Malik (Principal)
Ms. Yogita Bajaj (Editor- English Section)

Standing Row (Left to Right) Ms. Rakhi (Student Editor - Sanskrit Section)
Ms. Vidhi Bhardwaj (Student Editor - Hindi Section)
Ms. Asmita Grewal (Student Editor - English Section)

प्राचार्य संदेश

प्रिय विद्यार्थियों !

भारतीय मनीषा सांसारिकता, आध्यात्मिकता, नैतिकता, भौतिकता और वैज्ञानिकता तथा दैनिक आचार – व्यवहार के सूत्रों पर प्रारंभ से ही चिंतन करती रही है। सूक्ष्म से सूक्ष्मतम चिंतन भारतीय ज्ञानसाधना की प्रमुख विशेषता रही है। आत्मस्थ होकर ही सूक्ष्मता की तरफ जाया जा सकता है। प्रश्न उठता है कि सूक्ष्म तत्व और विचारों पर चिंतन करने से व्यक्ति क्या लाभ प्राप्त कर सकता है? सामान्य रूप से यह जगत स्थूल दिखाई देता है। फिर स्थूल जगत में जीवन को जीने के लिए सूक्ष्मता की आवश्यकता क्यों है? असल बात यह है कि यह स्थूल जगत हमारे ही सूक्ष्म चिंतन के रूप में हमसे प्रतिक्रिया करता है। मानव का प्रमुख उद्देश्य भौतिक और सूक्ष्म जगत की बारीकियों को सीखते हुए इन दोनों में सामंजस्य बैठाना होता है।

अपनी किशोरावस्था में आप सभी झूले में बैठकर झूले होंगे। झूले में बैठने का आनंद यही ले सकता है जो अपने शरीर का संतुलन झूले की गति से बनाकर चल सके। इनका अधिक से अधिक सामंजस्य झूले में बैठने के आनंद को और बढ़ा देता है। सभी विद्यार्थी अपने अध्ययन काल, में इसी प्रकार के झूले में बैठे होते हैं। शरीर का संतुलन और इंद्रियों की जीवन चेतना तथा झूले की गति में सामंजस्य बैठाकर ही आप इस अध्ययन काल का आनंद ले सकते हैं। झूले की गति से सांमजस्य करने पर ही बैठने वाले को आनंद मिल सकता है। अन्यथा दुर्घटनाओं की भी संभावनाएं रहती है। इसके लिए आपको अपनी दिनचर्या में से थोड़ा समय निकालकर आत्मस्थ

होकर भौतिक जीवन पर चिंतन करना होगा। [illegible] यात्रा और बाहर से आत्म की यात्रा — यही मानव जीवन के दो छोर हैं – [illegible] दो छोरों की तरह। फिर एक प्रश्न खड़ा हो जाता है कि संतुलन कायम कैसे किया [illegible] लिए दो प्रकार के नियम माने गए है— एक है – शाश्वत और दूसरा है समय सापेक्ष। जैसे विद्यार्थी के लिए अधिक नींद लेना वर्जित माना गया है। लेकिन अगर वह पूरे जीवन काल में ही नींद कम लेता रहे तो उसके बीमार हो जाने की भी संभावनाएं बढ़ जाएंगी। यह समय सापेक्ष नियम है। सुबह सूर्य उदय से पहले उठ जाना विद्यार्थी के लिए और अन्यों के लिए भी श्रेयस्कर बताया गया है। यह शाश्वत नियम है। आप सभी को भी ऐसे नियमों में सतुलन बनाकर ही जीवन जीना चाहिए। आत्म नियंत्रण से ही आत्म संतुलन प्राप्त किया जा सकता है। बुद्धिमान मनुष्यों की दो श्रेणियाँ बताई गई हैं। एक श्रेणी के मनुष्य इद्रिय तृप्ति के लिए भौतिक कार्य करने में निपुण होते हैं और दूसरी श्रेणी के मनुष्य आत्म निरीक्षक होते हैं जो आत्म साक्षात्कार के अनुशीलन के लिए जागते हैं। विचारवान पुरूष या आत्म निरीक्षकों के कार्य भौतिकता में लीन पुरूषों के लिए रात्रि के समान है। भौतिकतावादी व्यक्ति अज्ञान के कारण रात्रि में आत्म साक्षात्कार के प्रति सोए रहते हैं। गीता के दूसरे अध्याय में कहा गया है –

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जाग्रति संयमी।
यस्याम जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः।।

अतः व्यक्ति को आत्म निरीक्षण के लिए आत्म संयम रखना चाहिए। वर्तमान समय में जबकि अधिकांशतः ज्ञान पश्चिम की छलनी से छनकर हम तक पहुंचता है। हमें अपनी प्राचीन परंपराओं, साधनाओं , दर्शन तथा चिंतनधारा के गंभीर मूल्यांकन की नितांत आवश्यकता है। यदि निष्पक्ष शोध की दृष्टि से देखा जाए तो प्रतीत होता है कि बहुत सा पश्चिमी ज्ञान भारत से ही गया हुआ है। अथवा उसका मूल स्रोत भारत की परंपराओं में ही निहित है। इस परिप्रेक्ष्य में हमारे परंपरागत मूल्यों तथा अवधारणाओं को वर्तमान परिस्थितियों में सार्थक ढंग से प्रयोग करके उनसे लाभान्वित होने की आवश्यकता है। यह न केवल हमारे जीवन को भौतिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से समृद्ध करेगा अपितु, हमारे राष्ट्रीय और सांस्कृतिक गौरव को भी पुनर्जीवित करेगा। रमणीक के इस अंक में अपनी रचनाओं से विभिन्न प्रकार की संवेदनाओं को संवेदनशील रचनाकारों की वाणी ने व्यक्त किया है। इनकी रचनाओं में देश और समाज की सामयिक चिंताओं की अभिव्यक्ति और कोमल मन की मृदुल भावनाएँ मुखरित हुई हैं। मैं सभी नवोदित रचनाकारों को उनके लेखन के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

डॉ० जितेन्द्र मलिक
प्राचार्य

राजकीय कन्या महाविद्यालय
सेक्टर–14, गुरुग्राम

प्रधान संपादक की कलम से

[illegible] वालों के लिए लिखना और लिखने वालों के लिए लिखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य [illegible] सामान्य रूप से लिखने वाला अपने किसी व्यक्तिगत अथवा सामाजिक दुख से उत्पन्न करुणा के भाव से भीग कर अपने मनोभावों को साहित्य में अभिव्यक्त करता है। मानव मन में साहित्यिक भाव पैदा होने के बारे में यह परंपरागत रूप से दिया जाने वाला विचार है। मनुष्य ने अपने वातावरण और परिस्थितियों के विकास के साथ–साथ अपनी बुद्धि का भी विकास किया है। हिंदी के कवि केदारनाथ अग्रवाल ने लिखा है—

दुख ने मुझको जब–जब तोड़ा,
मैंने अपने टूटेपन को
कविता की ममता से जोड़ा।

निश्चित है कि कविता का प्रारंभ दुख करुणा और सहानुभूति के भाव से ही होता है। क्रौंच पक्षी के वध के दुख से द्रवित होकर ही लौकिक साहित्य के आदि कवि वाल्मीकि के मुख से आदि काव्य प्रकट हुआ था। मन की सहज स्वाभाविक अनुभूति को प्रकट करना, लिखने का एक प्रकार का ढंग है। एक अन्य प्रकार का लिखने का तरीका है– दूसरों के प्रबोधन के लिए लिखना ।

इसी प्रकार से व्यक्ति सापेक्ष और समाज सापेक्ष तरीके से लिखने के अलग–अलग ढंग विकसित होते चले गए हैं या मानव की बुद्धि ने उन्हें विकसित कर लिया है। इस प्रकार के साहित्य में दुख, करुणा और सहानुभूति का सहज स्वाभाविक प्रस्फुटन नहीं है। वह एक निश्चित स्वार्थ पूर्ति के विचारों के प्रसार का साधन दृष्टिगत होता है। विकसित बुद्धि का अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए अपनी गुटबंदियों के मोर्चे खड़े करना इस प्रकार के साहित्य का उद्देश्य बन गया है।

आज समकालीन साहित्य में अनेक प्रकार के विमर्शों की बात हो रही है। कवि अगर प्रवास पर चला जाए तो प्रवासी विमर्श बन जाता है। संतों ने एक जगह बैठकर कभी जीवन यापन किया ही नहीं। वे हमेशा ही प्रवासमूलक जीवन व्यतीत करते रहे हैं। यानी उनके प्रवास को तो प्रवास नहीं माना जाएगा और हमारी छोटी सी यात्रा भी मिलों दूर की यात्रा मानी

जाएगी। इसी प्रकार अन्य विमर्शों की भी स्थिति है। साहित्य में खंड–खंड अनुभूतियाँ मिलकर एक अखंड रचना बनती है। वैसे देखा जाए तो साहित्य पूरे मानव जीवन का ही विमर्श माना जाता है।

यही कारण है कि प्राचीन साहित्यकार जीवन की अनेक खंड–खंड अनुभूतियों को मिलाकर महाकाव्यात्मक रचनाओं का निर्माण करता है। जिसमें मानव जीवन को एक समग्र इकाई के रूप में देखते हुए चिंतन–मनन किया गया है। आधुनिक चिंतन पद्धतियों ने चाहे बेशक अपने सूक्ष्म चिंतन से साहित्य के शरीर के जितने रेशे–रेशे कर दिए हों, किंतु वे एक समन्वित, सुडोल और सुदृढ़ तथा प्रेरणादायक रचनाओं की आधारभूमि तैयार नहीं कर सके हैं। मानव जीवन के प्रतिबिंब के रूप में साहित्य एक समग्र शरीर है। उसको राजनीतिक स्वार्थों के लिए टुकड़ों में बांटना कहां तक उचित है? विश्व साहित्य और विश्व संस्कृति के चिंतन की आवश्यकता को खंड–खंड दृष्टियों में विभाजित साहित्य कैसे पूरा कर सकता है? जिन्होंने लिखना सीख लिया है उन्हें प्राचीन साहित्य को पढ़ना चाहिए और जिन्होंने पढ़ना सीख लिया है उन्हें मानव जीवन को समग्र इकाई मानकर साहित्य लिखने का ढंग सीखना चाहिए।

डॉ० अमितेश बोकन
सहायक प्रोफेसर
हिंदी विभाग

कला ही यह सब कर सकती है। कला ही मनुश्य को विखंडित अवस्था से ऊपर उठाकर पूर्णता की अवस्था में, एकीकृत अस्तित्व की अवस्था में, ला सकती है। कला मनुश्य को यथार्थ समझने में समर्थ बनाती है, और न केवल यथार्थ को झेलने में उसकी सहायता करती है, बल्कि यथार्थ को अधिक मानवीय तथा मानवता के लिए अधिक उपयुक्त बनाने के उसके दृढ़ निश्चय को भी बढ़ाती है। कला स्वयं एक सामाजिक यथार्थ है। समाज के लिए कलाकार सबसे बड़ा जादूगर है, और समाज को इस सबसे बड़े जादूगर की जरूरत होती है।

अंर्स्ट फिशर

संपादक मंडल

प्रधान संपादक	:	डॉ० अमितेश बोकन सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिंदी – अनुभाग – संपादक	:	डॉ० अमितेश बोकन सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
छात्र – संपादिका	:	विधि भारद्वाज बी.एस.सी., प्रथम वर्ष
अंग्रेजी – अनुभाग – संपादिका	:	योगिता बजाज सहायक प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग
छात्र – संपादिका	:	
संस्कृत – अनुभाग – संपादक	:	वजीर सिंह सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
छात्र – संपादिका	:	राखी बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

हिंदी–अनुभाग – रमणीक (2022–2023)

संपादक – डॉ० अमितेश बोकन
सहायक प्रोफेसर (हिंदी विभाग)

छात्र संपादिका – विधि भारद्वाज
बी०एस०सी० मेडिकल, द्वितीय वर्ष

1.	प्रकृति की लीला	वंदना, बी.एस.सी. (नॉन मेडिकल), द्वितीय वर्ष
2.	पिता का प्यार एवं बलिदान	अन्जु शर्मा, बी.एस.सी. (नॉन मेडिकल), द्वितीय वर्ष
3.	प्रकृति	विनीता, बी.एस.सी. (बायोटेक्नोलॉजी), द्वितीय वर्ष
4.	ए जिंदगी	प्रतिक्षा, बी.ए., द्वितीय वर्ष
5.	ऐ खुदा मुझे फिर वही माँ देना	प्रतिक्षा, बी.ए., द्वितीय वर्ष
6.	आजादी	कोमल कुमारी, बी.ए., हिन्दी (ऑनर्स) द्वितीय वर्ष
7.	एहसास तुझे कब होगा	कनिष्का शर्मा, बी.ए., हिन्दी (ऑनर्स) तृतीय वर्ष
8.	लड़की	विधि भारद्वाज, बी.एस.सी., प्रथम वर्ष
9.	इंतजार	विधि भारद्वाज, बी.एस.सी., मेडिकल, द्वितीय वर्ष
10.	बटन	विधि भारद्वाज, बी.एस.सी., मेडिकल, द्वितीय वर्ष
11.	ख्वाब	शीला यादव, भूगोल विभाग, एक्सटेंशन लेक्चरर
12.	युवा शक्ति	अश्विनी सिंह नरूका, बी.एससी. बायोटेक, तृतीय वर्ष
13.	गरीबी	प्रगति तिवारी, स्नोतकोत्तर, हिन्दी
14.	बचपन	बीना मलिक, स्नोतकोत्तर, हिन्दी
15.	माँ	सोनिया, एम.ए. हिन्दी
16.	ईमानदारी	शीतल शर्मा, स्नातकोत्तर, हिन्दी
17.	पापा	रवीना धाँधी, स्नातकोत्तर, हिन्दी
18.	संगीत	डॉ० अमितेश बोकन, सहायक प्रोफसर, हिंदी विभाग
19.	कविता का अर्थ	डॉ० अमितेश बोकन, सहायक प्रोफसर, हिंदी विभाग
20.	गुरु ज्ञान के दीप जलाएँ	डॉ० लोकेश शर्मा, सहायक प्रोफेसर, संगीत विभाग
21.	पृथ्वी को बचाना है	नूरेशा, बी.ए. इंग्लिश ऑनर्स, द्वितीय वर्ष
22.	स्कूल के दिन बड़े याद आएंगे	आशु विमल, बी.ए. हिंदी ऑनर्स, तृतीय वर्ष
23.	माँ	श्रीमती शीला यादव, सहायक प्रोफेसर, भूगोल विभाग
24.	मेरा क्या कसूर था	अवंतिका तिवारी, बी.एस.सी. नॉन मेडिकल, तृतीय वर्ष

प्रकृति की लीला

प्रकृति की लीला न्यारी,
कहीं बरसता पानी, बहती नदियाँ
कही उफनता समुंद्र है,
तो कहीं शांत सरोवर है।

प्रकृति का रूप अनोखा कभी,
कभी चलती साए–साए हवा,
तो कभी मौन हो जाती,
प्रकृति की लीला न्यारी है।

कभी गगन नीला, लाल, पीला हो जाता है,
कभी काले–सफेद बादलों से घिर जाता है,
प्रकृति की लीला न्यारी है।

कभी सूरज रोशनी से जग रोशन करता है,
कभी अंधियारी रात में चाँद तारे मुस्कुराता है,
प्रकृति की लीला न्यारी है।

कभी सुखी धरा पर धूल उड़ती है,
तो कभी हरियाली की चादर ओढ़ लेती है,
प्रकृति की लीला न्यारी है।

कभी सूरज एक कोने से निकलता है,
दूसरे कोने में जाकर फिर सिमटता है,
प्रकृति की लीला न्यारी है।

वंदना
बी.एस.सी. (नॉन मेडिकल), द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक – 133

पिता का प्यार एवं बलिदान

माँ की ममता को तो, सब ने ही स्वीकारा है
पर पिता की परवरिश को, कब किसने ललकारा है!!
मुश्किलों की घड़ियो मे अक्सर, मेरे साथ खड़े थे वो
मेरी गलतियाँ थी फिर भी, मेरी खातिर लड़े थे वो!!
कमियों का अहसास, मुझको कमी न हो पाई!
कंपकंपा कर सोते थे वो, मेरे ऊपर थी रजाई!!
माँ की गोद की गरमाहट के बराबर उनकी थपकी
कंधे उनका बिस्तर मेरी, आँखे हल्की सी जो झपकी!!
उनके लाड में जो पाया, थोड़ा कडवापन सही
मेरी खातिर मुझे डाँटा, था वही बचपन सही!!
जिंदगी की दौड़ में अब, अपने पैरों पर खड़े
उनके जज्बों की बदौलत, मुश्किलों से हम लड़े!!
सर पे उनका साया जब तक, चिंता न, डर है कोई
उनके कंधों की बदौलत बढ़ रही है जिंदगी !!

अन्जु शर्मा
बी.एस.सी. (नॉन मेडिकल), द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक – 147

प्रकृति

सुन्दर रूप इस धरा का 'आँचल जिसका नीला आकाश
पर्वत जिसका ऊँचा मस्तक
उस पर चाँद सूरज की बिंदियों का ताज
नदियों–झरनों से छलकता यौवन
सतरंगी पुष्प–लताओं ने किया शृंगार

खेत–खलिहानों में लहलाती फसले
बिखराती मंद–मंद मुस्कान
हाँ, यही तो है,
इस प्रकृति का स्वछंद स्वरूप
प्रफुल्लित जीवन का निष्छल सार !!

विनीता
बी.एस.सी. (बायोटेक्नोलॉजी), द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक – 1220341050007

रूप, कथा, पद, चारु पट, कंचन, दोहा, लाल।
ज्यों ज्यों निरखत सूक्ष्मगति, मोल रहीम बिसाल।।
अमर बेलि बिनु मूल की, प्रतिपालत है ताहि।
रहिमन ऐसे प्रभुहिं तजि, खोजत फिरिए काहि।।

– रहीम

ए जिंदगी

पूछा जो मैंने एक दिन खुदा से,
अंदर मेरे ये कैसा शोर है।
हँस फिर मुझ–पर बोला,
चाहतें तेरी कुछ और हैं।
मगर रास्ता तेरा कुछ और है।।

रूह को सँभालना था तुझे,
पर सूरत सँवारने पर तेरा जोर है।
खुला आसमान, चाँद, तारे चाहते हैं तेरी,
पर बंद दिवारों को सजाने पर तेरा जोर है।।

सपने देखता है खुली फिजाओं के,
पर बड़े शहरों में बसने की कोशिश पर जोर है।
दिल की अमीरी चाहत है तेरी,
पर पैसे कमाने पर तेरा जोर है।

प्रतिक्षा
बी.ए., द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक – 1220341002370

ऐ खुदा मुझे फिर वही माँ देना

ए खुदा मुझे फिर वही माँ देना!
फिर वही गोद और
उसी का आसरा देना
खेला हूँ जिसकी गोद में
सोया हूँ जिसकी गोद में
सीखा है जिसकी उँगलियों को पकड़कर चलना
फिर उसी उँगलियों का सहारा देना

ए खुदा मुझे फिर वही माँ देना!
आँचल में छुपाया है जिसने,
धूप को बनाया छाया जिसने,
जिस आँचल से पूछा करती अकसर वो मेरे पसीने,
जब आता था मैं थक कर घर में,
फिर उसी आँचल का अहसास देना
ए खुदा मुझे फिर वही माँ देना।।

प्रतिक्षा
बी.ए., द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक – 1220341002370

आजादी

यह आजादी है देश के लिए
त्याग और बलिदान का
यह आजादी है मातृभूमि के
गौरव और स्वाभिमान का।।
इसी दिन हमारे देश की आजादी का है जन्मदिवस
जो उत्साह और उमंग लाता है हर बरस।।
आजादी ही सर्वोच्च है
पर तब जब हमारी सोच भी सर्वोच्च है
'आजादी का मतलब यह नही है कि बस, अंग्रेजो की
गुलामी से आजादी पाई है,
यह तो अनमोल है जिसे गाँधी और सुभाष ने हमें दिलायी है
है सौभाग्य मेरा जो मैंने आजाद हिन्द में जन्म लिया
जिसके लिए कितने वीरों ने प्राण न्योछावर किया।।

कोमल कुमारी
बी.ए., हिन्दी (ऑनर्स) द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक – 7827101905

संसार को बनाने में ईश्वर का न कोई कार्यविशेष है और न ही कोई विशेष प्रयोजन है, किन्तु ज्ञानबल और क्रिया–ये तीन वस्तुएं भगवान के अन्यतम स्वाभाविक गुण हैं। परमात्मा अपने भक्त की अनन्यभक्ति से प्रसन्न होकर उसका उद्धार करने स्वयं ही अवतरित हो जाते हैं।

–बृहदारण्यक उपनिषद

एहसास तुझे कब होगा

न तू इस जग का न ये जग तेरा।।

शिकवे शिकायतों में जिंदगी जानी है।
मृत्यु अटल सच्चाई है, ये तो एक दिन आनी है।।

सीमाओं में बंद शरीर, कहाँ तक तुझे ले जाएगा।
त्याग यह वस्त्र पुराना, तू एक नया शरीर पाएगा।।

अटल को पहचान ले, सत्य को तू जान ले।
बीत गया सो बीत गया, बीती पर न तुम जाना।।

जन्म मरण के फेरे से कहाँ कोई बच पाया है
आज यहाँ तो कल वहाँ
ले जनम बार–बार तू यहाँ हैं आया
अब तक ना तुझ को पहचान हुई
जीवन को तेरे सुबह से शाम हुई

और कितनी बार तू, जीवन मरण के फेरे में आएगा।
बोल रे बंदे कब तक तू, मेरे ईश्वर को न अपनाएगा।।

कनिष्का शर्मा
बी.ए., हिन्दी (ऑनर्स) तृतीय वर्ष
अनुक्रमांक – 1210341064038

लड़की

जिंदगी के राजो को
कभी थोड़ा छुपाना पड़ा
जहाँ तुरंत मैं रो पड़ा
वहाँ भी मुस्कुराना पड़ा
कभी बोलना चाहिए था तो
मगर सिर झुकाना पड़ा
मौत की पीडा सहकर भी
जिन्दा हूँ जताना पड़ा।

करा करो पीला तो
दिल को मुझे मनाना पड़ा
पर न साथ किसी का मिला मुझको
फिर खुदको ही दबाना पड़ा
बयाँ करते हुए सोच को
न जाने क्यों सकुचाना पड़ा।

जहाँ हामी भरना चाहती थी
वहाँ मुझे नकारना पड़ा
हुक्म दूसरो का लेते लेते
खुद के जज्बातो को मिटाना पड़ा
पर क्या करती मैं लड़की हूँ न
खुद से मुझको हारना पड़ा।

विधि भारद्वाज
बी.एस.सी., प्रथम वर्ष
अनुक्रमांक – 125

इंतजार

इंतजार करना था जरा सा
पर दिखे नहीं तुम कहाँ रूके थे
वक्त जो बीता ऐसा बीता
मुड़के देखा तुम जा चुके थे

मिले तो सही पर यूँ मिले
शुरू थोड़ा संवाद–सा हुआ
फिर हाथ से हाथ छोड़ चले
जैसे कोई हादसा हुआ

पहले जख्मों को भरना था
नए तो अभी कहाँ दुखे
वक्त जो बीता ऐसा बीता
मुड़के देखा तो तुम जा चुके

दिखाता हूँ मैं आगे से
कि निखार मेरा निखर गया
पर दिल जो संभाला था मेहनत से
देखो, फिर से वो बिखर गया

हाथ जो मैंने तुम्हारा थामा था
कैसे तुम्हारे नयन झुके थे।
वक्त जो बीता ऐसा बीता
मुड़के देखा तुम जा चुके थे।

विधि भारद्वाज
बी.एस.सी., मेडिकल, द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक – 125

बटन

उस दिन मेरा बेटा, मेरे पास आकर बोला— "पापा, मुझे स्कूल जाना है, शर्ट
कलाई का बटन बंद कर दो।" उसके मुख से निकले इन दो वाक्यों ने मुझे मेरे अतीत
पहुँचा दिया था, जब मैं आठ वर्ष का ही था, शर्ट के बटन मुझसे भी बंद नहीं हो पाते थे।
अपने पिता श्री से कहा— "पिताजी ये बन्द नहीं हो रहे हैं, आप कर दो ना?" उन्होंने क
सख्त हाथों से तुरंत उनको बंद कर दिया था। ये सोचते–सोचते मैं अपने मस्तिष्क
वर्तमान में पाता हूँ। अब तक मेरे बेटे का बटन भी बन्द हो चुका था की तभी, मेरे बूढ़े पिता
आते हैं, अपने हाथों में बेंत लेकर शायद वो कहीं जाने के लिए तैयार हो रहे होंगे, उन्होंने
ही एक पुरानी शर्ट डाल रखी थी, पर बटन बन्द नहीं थे, वो इशारे से मेरे बेटे को
बुलाकार अपने तोतली आवाज में उसे बटन बन्द करने को कहते हैं। उनके हाथों में क
सिकुड़न आ चुकी थी, नाखून भी पीले और लंबे हो चुके थे, और ठीक मेरे बचपन की तरह
उनके हाथ उन बटनों को बंद करने में असमर्थ हो चुके थे। ना जाने क्यों, पर जब वो
काँपते हाथों की कलाई के बटन बंद करवा रहे थे, तब उस दृश्य में मुझे मेरे बचपन का
प्रतिबिंब नजर आया।

विधि भारद्वा
बी.एस.सी., मेडिकल, द्वितीय
अनुक्रमांक – 1

धनहीन को धन, पशुओं को वाणी, मनुष्यों को स्वर्ग और देवताओं को मोक्ष की इच्छा सदैव रहती है।

–चाणक्य नीति

ख्वाब

खुली आँखों ने जो देखे थे ख्वाब
वो कुछ अधूरे तो कुछ पूरे होते गए...

हमने तो खुद से बस चलने का वादा किया
कुछ किनारा बढ़ा तो कुछ हम बढ़ते गए
मुश्किलें तो सफर में बहोत थी मगर
ना हारने का वादा हम खुद से करते गए

चाह तो थी आसमाँ छूने की मगर
बादलों के ऊपर तो हम आ ही गए
खुद को काबिल तो हम समझते थे बहोत मगर
काबिलियत को बस आगे बढ़ाते गए

जब हटे एक कदम पीछे कभी
तो चार कदम आगे का होसला बनाते गए
गर एक अंजुली खुशी बिखरी कहीं
अपनों की दुआओं से झोली भर पाते गए

सफर में चले, कभी गिरे, फिर उठे सम्हले
बस यूँ अपनी मंजिलों को हम पाते गए
अधूरे ख्वाबों का कभी पीछा ना किया
आँखों में नए ख्वाब संजोते गए
खुली आँखों .....

शीला यादव
भूगोल विभाग
एक्सटेंशन लेक्चरर

कांधे पर जिसके सारे समाज का प्रभार है,
धमनियों में जिसकी अटल जोश का संचार है।
आज की मेहनत से जिसने कल को है बुना,
वो हमारे देश का है कर्मठ युवा।
वो हमारे देश का है कर्मठ युवा।।

साहस और सच्चाई का विश्व में प्रमाण है,
मातृभूमि के लिए जीवन भी कुर्बान है।
रोक सके न कोई जिसे, चाहे पानी हो या हवा,
ऐसा है हमारा दृढ़ और अडिग युवा।
ऐसा है हमारा दृढ़ और अडिग युवा।।

उम्मीद भरी आँखों में सपने हजार है,
बदलाव की आग जिसमें बरकरार है।
है तो सारे युवा, सारे देश का सम्मान है,
संपूर्ण राष्ट्र के लिए, एक अमूल्य वरदान है।
संपूर्ण राष्ट्र के लिए, एक अमूल्य वरदान है।।

अश्विनी सिंह नरूका
बी.एससी. बायोटेक, तृतीय वर्ष
अनुक्रमांक – 1210341050025

गरीबी

गरीबी भी क्या चीज है, जो ख्वाहिशें मारकर जीना सीखा देती हैं।
सपनों को दबाकर, जीना सीखा देती हैं,
देखकर किसी चीज को करता हैं, मेरा भी,
मन कि मैं उसे पा लूँ किंतु फिर
याद आता है, अरे! मैं तो गरीब हूँ,
अगर कोई चीज आसानी से मिल जाए तो
सपना सा लगता है, क्योंकि आदत नहीं मुझे
किसी चीज को आसानी से पाने की
अब मन में नहीं बची ख्वाहिशें,
वरना जज्बा, जुनून तो मुझ में भी है,
लेकिन इस दुनिया को फुर्सत कहाँ,
हम जैसों को समझने की,
काबिलियत तो मुझ में भी है,
पर जेब में गाँधी हो ऐसी कहाँ किस्मत मेरी
अपने में ही जीता हूँ,
बस इतना सोचकर रो देता हूँ,
कि इतनी अच्छी किस्मत कहाँ मेरी,
कि ऊपर वाले को मंजूर हो खुशी मेरी,
हाँ माना गरीब पैदा होना तकदीर है मेरी
लेकिन गरीब मरना तो कर्म में है,
लेकिन इस स्वार्थ के बाजार में
जीतने की नहीं हिम्मत मेरी,
हाँ मैं गरीब है, हाँ मैं गरीब हूँ।

प्रगति तिवारी
स्नोतकोत्तर, हिन्दी
अनुक्रमांक – 2205058

बचपन

बचपन बड़ा सुहाना होता है
जीवन का अनमोल खजाना होता है

बचपन में तितली जैसे होते है
यहाँ–वहाँ बस ठिकाने होते है

काम का बोझ ना मन पर होता है
बचपन सभी को अपना प्यारा होता है

मिट्टी से घर बनाना और उनको सजाना
मुझको याद आ रहा वो गुजरा जमाना

पुरानी चप्पलों को काटकर पहिये बनाना
उनकी गाड़ी बनाकर फिर खूब दौड़ाना

मिट्टी में खेलना खूब प्यार उंडेलना
लड़ना–झगड़ना फिर रूठना मनाना

बच्चों की वो टोलियाँ, रंगों की रंगोलियाँ
करते थे बैठकर घंटो हम ठिठौलियाँ

मुझको अभी तक याद है, मीठा सा एहसास है
कागज से बनी फिरकियाँ मुझे चलाना याद
इसलिए बचपन बहुत ही खास है।

बीना मलिक
स्नोतकोत्तर, हिन्दी
अनुक्रमांक – 51

माँ

आ ना माँ पास बैठ तेरे रखे हाथों पर
प्यार से नमी रख दूँ तेरे प्यारे चहरे पर
हल्की सी हँसी रख दूँ
तू तो रोज ही प्यार जताती है
आज थोडी ममता मुझे भी लुटाने दे ना
बस एक दिन के लिए मुझे नानी मां बन जाने दे ना
तू थक गई होगी ना थोडा सर दबाने दे ना
तू तो रोज ही सुलाती है,
आज मेरी गोद में सर रखकर तू सोकर देख
मेरे दिखाए सपने में एक दफा खोकर देख
तू हमेशा काम में व्यस्त रहती है
आज थोड़ा आराम कर ले ना माँ
अपने नाम एक शाम कर ले ना माँ
जैसे तू हर रोज बनाया करती थी
वैसे ही आज मैं भी तेरी चोटी बना देती हूँ
आ माँ तेरे बाल संवार देती हूँ
तू तो रोज ही चुल्हे में अपना हाथ जलाती है
आज मैं तेरे लिए खाना बना देती हूँ
धूप सर जल रहा होगा थोड़ी छाँव बिछा दूँ क्या
तू तो रोज ही प्यार लुटाती है
थोड़ी ममता मैं भी लुटा दूँ क्या?

सोनिया
एम.ए. हिन्दी
अनुक्रमांक – 9

ईमानदारी

एक गाँव में श्यामू नाम का लड़का रहता था। स्वभाव से वह बहुत ही अच्छा था। उस
एक खेत भी था, जो बहुत ही छोटा था। जिस कारण उसके बड़े परिवार की गुजर–बसर बहु
मुश्किल से हो रही थी। वह अपने खेत में बहुत ही मन लगाकर काम करता था। खेत छोटे होन
कारण जल्दी ही वह काम खत्म कर लिया करता था। उसने सोचा क्यों न मैं किसी के खे
काम कर लिया करूंगा जिससे पैसों की भी दिक्कत कम हो जाएगा। क्योंकि वह काम
करके अपने घर ही रहा करता था।

गाँव के सेठ जी बड़े ही भले इंसान थे। उसने श्यामू से कहा कि तुम मेरे खेत में काम
लिया करो और फसल की कमाई का आधा पैसा मुझे दे दिया करो। तुम्हें मजदूरी करने
जरूरत नहीं है। खेत में काम करते समय श्यामू का पैर किसी चीज से टकराया। उसने खोद
देखा तो उसमें मटका था, जिसमें बहुत सारे सोने, चाँदी थे। उसका मन एक बार ललचा गय
परंतु उसने फिर सेठ जी को बता दिया। सेठ जी उसकी ईमानदारी देखकर खुश हुआ और के
में पूरा खेत उसे दे दिया।

शीतल शर्मा
स्नातकोत्तर, हिन्दी
अनुक्रमांक – 220505

स्वप्नद्रष्टा या निर्माता वही हो सकता है, जिसकी अंतर्दृष्टि यथार्थ के अंतस्तल को भेदकर उसके पार पहुँच गई हो, जो उसे सत्य न समझकर केवल एक परिवर्तनशील अथवा विकासशील स्थिति भर मानता हो।

– सुमित्रानन्दन पन्त

पापा

किसी ने बड़ी सही बात कही है कि "जेब खाली हो फिर भी मना करते नहीं देखा ; मैंनें पापा से बड़ा अमीर इंसान नहीं देखा।" एक बार एक लड़का अभियांत्रिकी की पढ़ाई कर रहा था। उसके पापा उसे अकसर कहा करते थे कि पढ़ाई पर ध्यान दो, अच्छी नौकरी प्राप्त करो। रोजाना इन्हीं बातों से परेशान होकर वो लड़का घर से अपने पापा का पर्स लेकर चला जाता है। गुस्से में वो लड़का अपने पापा के जूते पहनकर चला जाता है। कुछ दूर चलने के बाद वो देखता है कि जूते फटे हुए हैं और उसके पैर से खून आ गया है। वो एक जगह बैठकर जूता निकालता है और सोचता है कि पापा के पर्स से पैसे निकाल कर अस्पताल चलता हूँ। जब उसे अपने पापा का पर्स खोलकर देखा तो आश्चर्यचकित रह गया। पर्स में केवल 100 रूपये थे। अनेक कागज भी थे। उसने पहला कागज निकाला वो पर्ची थी उधारी की जो उसके पापा ने अपने दोस्त से लिये हुए थे। अपने बेटे के लैपटॉप के लिए। बाकी की पर्ची भी उधारी व जिम्मेदार की थीं।

उसे अहसास हो राह था कि वो गलत कर रहा था। अंत में एक अखबार का टुकड़ा निकला जिसमें लिखा था 'पुराना स्कूटर देकर नई बाईक ले जाओ'। उसे याद आया कि उसने बाईक लेने की जिद की थीं। वो लड़का उस पते पर पहुँचा जो अखबार पर लिखा था। वहाँ जाकर उसने अपने पापा को रोका कि आप अपना स्कूटर मत बेचो। मैं गलत था मुझे माफ कर दो। अब मैं एक अच्छी नौकरी लगकर आपकी जिम्मेदारी मैं उठाऊँगा।

रवीना धाँधी
स्नातकोत्तर, हिन्दी
अनुक्रमांक – 2205057

मनुष्य जब कोई चीज प्राप्त नहीं कर सकता है, तो वह अपनी दुर्बलता का अनुभव न कर परिस्थितियों को ही दोष देने लगता है। अपने कार्य में वही सफल होते हैं, जो दूसरों को दोष न लगाकर अपनी कमियों को देखते हैं। अपनी त्रुटियों को दूर कर वह सफल हो जाते हैं।

– विष्णु शर्मा (पंचतन्त्र)

संगीत

पहाड़ का मौन संगीत
पत्थरों की छाती की लकीरों से बिखरता है
तप्त किरणें हर कोण से करती
प्रहार जब
मरूत के पृशत अंतरिक्ष में ले जाते
तब
चंद्रमा की चांदनी बरसती है।
शीत हिम की चादर घेर लेती उसे
जब
पत्थरों का पराग बह निकलता
तब
गंध के भंवरे भंवर बनाते
पत्थरों को हवा में संचरित करते हैं।
पहाड़ चलता दौड़ता है
जब
दूर मुस्कुराती नदी की लहरें मचलती हैं
किनारों पर धरती पर
पानी से नम रेत से सुरभि उमड़ती है
पहाड़ चलता दौड़ता है
तब।

डॉ० अमितेश बोकन
सहायक प्रोफसर
हिंदी विभाग

कविता का अर्थ

कविता का अर्थ
बहुत कुछ बदल गया....
प्रवंचक के हाथ में जाने पर
व्यंजना मुखर हो गई।
कविता का शरीर
बेडौल हो गया
हवा भर गई
फूल कर कुप्पा हो गई
चाटुकार के हाथ में जाने पर।
कविता की आत्मा में
विषाद भर गया
यश के भूखे कवि के
तार सप्तक में गाए जाने पर।
कविता का भाव जगत
विराम पाकर ठहर गया
श्वेत कुंतली दुष्कर खाइयों
की टेढ़ी–मेढ़ी लकीरों में खो जाने पर।
कविता का विचार तंतु
दिवालिया हो गया
विशेष मतवादी बौद्धिक की
शरण में जाने पर।
कविता का सीधा मार्ग
काँटों से भर भटक गया
जोंक जैसे वर्ग के
हाथ में जाने पर।
कविता खिल उठी

रूठे प्रिय को पाने पर।
कविता वह चली
करुणा को सामने देखने पर।
कविता आत्मिक हो गई
हृदय से हृदय मिलने पर।
कविता छरहरी हो गई
बारिश की बूंदों के पानी पर।
कविता महकती धरती हो गई
उछलते कूदते भागते
बेवजह दौड़ लगाते
सांस फूलाते
बच्चों से मिल जाने पर।

डॉ० अमितेश बोकन
सहायक प्रोफसर
हिंदी विभाग

जैसे ईख से रस निकाल लेने पर केवल सीठी रह जाती है, उसी प्रकार जिस मनुष्य के हृदय से प्रेम निकल गया, वह अस्थि चर्म का एक ढेर रह जाता है।

कविता सच्ची भावनाओं का चित्र है और सच्ची भावनाएँ चाहे वे दुःख की हो या सुख की, उसी समय संपन्न होती है जब हम दुःख या सुख का अनुभव करते हैं।

— मुंशी प्रेमचन्द

गुरु ज्ञान के दीप जलाएँ

गुरु प्रकाश का पुंज है
गुरु ही देते ज्ञान
गुरु चरणों में बैठकर
मिट जाता अज्ञान
गुरु की यही है कामना
गुरु की यही है भावना
गुरु की यही है साधना
सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
माँ कश्चिद दुःख भाग भवेत्
आओ मिलकर करें गुणगान
गुरु ही जग में हैं गुणों की खान
गुरु बिन कुछ भी समझ न आए
गुरु ही सबको राह दिखाए
गुरु ही अंधतमस को मिटाए
गुरु ही ज्ञान के दीप जलाए
अंतर्मन को पावन करके
गुरु करें कल्याण
कृष्ण रुप में हरि भी आए
गुरु बनके गुरु बनके
कर्मयोग के बल पर छाए
प्रियतम सबके मन के
गुरु और देश की माटी का
आओं करें सम्मान।

डॉ. लोकेश शर्मा
अध्यक्ष एवं सहायक प्रोफेसर
संगीत विभाग

पृथ्वी को बचाना है

22 अप्रैल आया है
पृथ्वी दिवस मनाया है
पृथ्वी को हम ने किया बीमार
अब हम ही कर सकते हैं उसका उद्धार
पृथ्वी को बचाना है
स्वच्छ स्वस्थ बनाना है।
धरती से ही हम जन्म लेते हैं
और फिर उसमें मिल जाते हैं
पृथ्वी को हमने किया प्रदूषित
अब हम ही करेंगे उसको विभूषित
पृथ्वी को बचाना है
और उसको सजाना है
कूड़ा–कचरा हटाना है
पृथ्वी को साफ–सुथरा बनाना है।
धरती हमें सब कुछ देती
बदले में कुछ भी न लेती
पृथ्वी को बचाने का
संकल्प हमें उठाना है
धरती हमारी माता है
जिसने हमें सबकुछ दिया वो जीवन दाता है
पृथ्वी को स्वच्छ, सुंदर और स्वस्थ बनाकर
पेड़ बचाकर, पानी बचाकर
पृथ्वी को बचाना है
पृथ्वी–संरक्षक बनकर आगे आना है
ना गंदगी फैलानी है ना प्रदूषण करना है
सिर्फ और सिर्फ पृथ्वी को बचाना है
अगर पृथ्वी रहेगी स्वच्छ और स्वस्थ
तो हम भी रहेंगे आत्मस्थ
पृथ्वी बचाओं
दुनिया में हरियाली फैलाओं।

नूरेशा
बी.ए. इंग्लिश ऑनर्स, प्रथम वर्ष
अनुक्रमांक – 1210341062044

स्कूल के दिन बड़े याद आएंगे

स्कूल के दिन बड़े याद आएंगे,
जब हम बड़े हो जाएगें।

वो टीचर की डाँट, वो गुस्सा वो प्यार,
बड़े याद आएंगे जब हम बड़े हो जाएंगे।

वो दोस्तों की हर छोटी बात पर हँसना,
छुट्टी के समय बोतल चुरा कर कहना,
पानी है क्या?

वो दिन बड़े याद आंएगे,
जब हम बड़े हो जाएंगे।

वो एक–दूसरे की कॉपी छीन लेना,
और कहना ..... एक मिनट
वो इतिहास पढ़ते–पढ़ते सो जाना
लंच की घंटी बजते ही
एक दूसरे का लंच छिपा लेना
और फिर मिल बाँटकर खाना,
बड़े याद आएंगे,
जब हम बड़े हो जाएंगे।

वो हंसी वो मजाक वो परीक्षा के समय
मिलकर एक साथ पढ़ना,
दोस्तों की बातों पर मजाक में गुस्सा होना
और फिर उनको प्यार से मनाना
बड़े याद आएंगे
जब हम बड़े हो जाएंगे,

वो टीचर की हर बात पर लेक्चर देना,

उदाहरण देकर नई–नई चीजों के बारे में समझाना,
और कुछ समझ न आने पर
उनका प्यार से समझाना
बड़े याद आएंगे,
जब हम बड़े हो जाएंगे।

वो हर बात पर एक दूसरे को चैलेंज करना,
वो हाथ खड़े करके पनिशमेंट को पूरा करना,
वो प्रार्थना के बीच में आँखें खोलना,
डेस्क बजाकर टीचर की डाँट सुनना
बड़े याद आएंगे,
जब हम बड़े हो जाँएगें।

वो पढ़ते समय ही लंच करना
एक दूसरे को परेशान करना
परीक्षा के समय एक दूसरे को बैस्ट ऑफ लक कहना,
वो इंग्लिश के पिरियड में चीट–चैट करना
टूटी फूटी इंग्लिश बोलकर मैम को इम्प्रैस करना
बड़े याद आंएगे
जब हम बड़े हो जाएंगे।

वो हर एक प्रश्न के बीच कन्फयूज होना,
आपस में डिसकस करना, फिर समझ न
आने पर टीचर से पूछना

सच में बड़े याद आएंगे
जब हम बड़े हो जाएंगे।

आशु कि
बी.ए. हिंदी ऑनर्स, द्वितीय
अनुक्रमांक – 12003406

माँ

मुझे बनाने में ए माँ तूने अपना सब छोड़ा है।
अपनी राहों को तूने मेरी मंजिल संग मोड़ा है।।
कर दूं अर्पण तुझपे अपना सब तो भी ये थोड़ा है।
तेरे प्यार भरे आंचल का माँ एक कोना भर ही चाहूँ मैं।
तेरी झोली भर दुआओं से माँ अंजुली भर ही चाहूँ मैं।।
मेरी ठोकर का दर्द ऐ माँ तेरी आँखों में देखा है।
बहनों की विदाई पे तुझे छुपके रोते भी देखा है।।
कठिन समय में माँ तेरा दुर्गा सा रूप भी देखा है।
तू ही मेरी शाम तू ही मेरा सवेरा भला कैसे तुझे भूल जाँऊ मैं
तेरी झोली भर दुआओं से माँ अंजुली भर ही चाहूँ मैं।।
तेरी पायल की झनकार से होता मेरा सवेरा था।
मेरी खुशी का राज तेरा मुसकाता चेहरा था।।
हर गलत सही पे माँ तेरी नजरों का कड़ा पहरा था।
सोने की तरहा तराशा तूने भला कैसे लोहा हो जाँऊ मैं
तेरी झोली भर दुआओं से माँ अंजुली भर ही चाहूँ मैं।।
निकली इक आह! भी तो सोती नहीं थी माँ अंखिया तेरी
बाट जोहती होकर अधीर जब भी हुई एक पल की देरी
तेरे माथे की झुर्रियां बताती माँ कितनी थी तुझे चिंता मेरी
तू ही मेरी जमीं है तू ही है आसमाँ–भला कैसे दूर हो जाँऊ मैं ?
तेरी झोली भर दुआओं से माँ अंजुली भर ही चाहूँ मैं
तेरे प्यार भरे आंचल का एक कोना ही चाहूँ मैं ।

श्रीमती शीला यादव
सहायक प्रोफेसर
भूगोल विभाग

मेरा क्या कसूर था

मेरे प्राण क्यों हरे ? मेरा क्या कसूर था ?
सिर्फ पुत्र की ही कामना थी, क्यों तू इतना मजबूर था ?

क्या मेरी हस्ती पर नहीं रहा विश्वास तुझे,
क्यों नहीं कर पा रहा तेरा जग स्वीकार मुझे।

समाज कहता है तू लड़का–लड़की में भेद कर,
इसीलिए मार दिया ना मुझे गला रेत कर।

भद्रकाली कपलिनी का जाप घर में करवाया,
जब स्वयं तेरे घर पधारी, तब मारकर क्यों फिकवाया?

अब तू और तेरा संसार देखेगा इस माया को
नारी जाति की शक्ति नहीं पराधीन किसी काया को।

अबला नहीं सबला हूँ मैं यह साबित कर दिखलाऊँगी,
कर्मभूमि हो या रणभूमि, मैं ही ध्वज लहराऊँगी,।

हाँ मैं ही ध्वज लहराऊँगी, हाँ मैं ही ध्वज लहराऊँगी।।

अवंतिका तिव
बी.एस.सी. नॉन मेडिकल, द्वितीय
अनुक्रमांक – 120034015

English Section - Ramneek (2022-2023)

Editor - Yogita Bajaj
Assistant Professor (Department of English) Associate Pr
Student Editor - Asmita Grewal
M.A. English, Roll No. 2213003

EDITORIAL

Yogita Bajaj, Associate Professor (Department of English)

1.	Potential Ripped Asunder	Asmita Grewal
	How Poverty– Barricades the Path to Education : A Brief Analysis	
2.	Architectural Marvel	Deepti
3.	Implicit Prejudice - A Racism Within You	Priyanshi Gaur
4.	Woah! Men Empowerment	Nisha Hasan
5.	To a mind that is still	Mahima Bhardwaj
6.	World Peace	Nisha Kuntal
7.	Virtual Education	Lavanya Madan
8.	The Thriving Indian Startup Ecosystem	Mahima
9.	About 'Think India'	Sakshi
10.	Beauty of Nature	
11.	To Travel is to Live	Kajal
12.	Darkness of Black	Kajal
13.	Patriotism	Gagi Saini
14.	Music has the power to heal	Jisha
15.	Water Conservation	Prachi
16.	World Peace	Nisha Kuntal

EDITORIAL

Dear Students

I would like to congratulate you once again because the next edition of the magazine is going to be published soon. After pondering a lot that what should I talk about, I finally decided to give my opinion on the great derangement of climate change as much is being talked about sustainibility' these days. Climate change is not actually a crisis of culture rather it is a crisis of imagination. Dipesh Chakrabarty, a famous essayists says, "humans have become geological agents changing the most basic physical processes of earth." The point has actually come when accelerating impact of global warming have begun to threaten the very existence of human beings. Accumulation of carbon in the atmosphere is rewriting the destiny of earth and trying to pose big challenges in front of coming generations. This future is anyhow linked with wide histories of imperialism and capitalism. But surprising thing is that if we go down the history lane we will observe that all branches of culture like poetry, art, architecture, theater, have responded to war, ecological calamity, and crisis of many sorts but they have ignored the scare climate change and unfortunately it would be judged as a great derangement by coming generations. When future generations look back upon the great derangement they will certainly blame their forefathers it is not the role responsibility of environmental activist, leaders thinkers and politicians to address the issue of climate crisis. Denialist attitude to this threatens unravel something very deeper. As a teacher I took this responsibility to awaken your consciousness as every human being is playing its role in making the human being the most domineering species of time similarly all every human being should contribute to the make the world a better place to live on.

"Be the change U want to see"

Yogita Bajaj
Editor English Section
Associate Professor, English

Potential Ripped Asunder

How Poverty Barricades the Path to Education
A Brief Analysis

Since ages, there has been a running argument between men, men of intellect, men of great potential, men who have built an empire, mankind able to comprehend, to understand, and to proceed. These were the barbaric beasts who were tamed and enslaved, but were they? Indeed, we have a history of animals ravaging every known corner of the world to claim their 'habitats', learning the ways to navigate the walkable land, the vast expanse of oceans, of terrains and mountains, of cultivable fields and barren lands. Would it be fair to consider such taming a form of slavery?

Slavery, once again, is not a term to have definite dimensions. There are servants, doing the unwilling bidding of their masters, bound by shackles, then there are men who are slave to their desires, unable to break free of their compulsions. There are those who are ensnared by the beauty of unknown, and as such, we are all slaves to one or the other cause. Probably the most prominent, and common master to all, is the Intellect, intellect that unites us in our commonality, and quite exquisitely divides us in our varying potential and plethora of practicalities, the pathos of which is how, regardless of its abundance, it has barely been utilized to its veritable potential.

To quote Plato, A renowned master of Philosophy; "There is nothing more divine than education. It is only through education that one truly becomes man."

It has been decided that education, on the baser level, is the discipline of teaching, and learning. In its utility, it is a structure deriving its strength and coherence from a greater intellectual, drawing apprehension of his, or her knowledge and methodically passing it down to the subjects of concern, precisely analysed by both the parties in the process. As the ages progressed, innovation came to humans. By nature every sentient entity is meant to evolve, both biologically and mentally. Such evolutions take rapid stances against the existing protocols which may appear concrete to mind, but may have an abstract positioning against the existing law which requires both revision as well as modification. As such, against the needs of aging chiefly to retain, sustain and advance accordingly, our forefathers have debated, and have been divided by their varying analysis. No such vision is stagnant in a transient world, and each eye sees differently. What we have learnt so far, may all be but mere perception, but is perception the only path to education?

One contemplates upon the disciplines of teaching and perceiving, the other stresses on interpreting. There are suggestions, hypothesis, experimentations, opposed by realism and science and surreal arts. Education is, as defined and refined by our posthumous mentors, the ability to understand, to nurture the internal nature, that allows the man to be human, and to be

human is to question.

Comprehension is the key element of education, the building blocks of our mankind that allowed us to gain hold of our sentience and become what we now describe as 'human beings'. Classified as 'homo sapiens', the terminology itself derives its essential hint from the term 'wise man'. The mannerism of fleeing from the trouble, the need to shield himself, to build the shield and to use the nature to his avail; this need to be saved, and to elevate his place above that perpetual state of survival has brought the man to this stage of innovation and exhilaration.

The world may have been separated by the constructs of politics, of linguistic barriers, of cultural conundrums, but the need to be educated and educate remains the same. The amalgamation of all these constructs had risen from the assembling of the incoherent, put together meaningfully as it was utilized to create foundation of our disciplines. However, even after all these years of growing and prospering, having managed to subside our superstitions of those murky years, in the pursuit of greater knowledge, the world still fell into the hollowing dark pit of anguish. The wealth accumulated from all of this had led to and ever rising greed that could not be assuaged so easily. All these constructs of mankind are tied together in an unceasing cycle of conceptual agony; two serpents coiled around each other, spiritualism and materialism, unspectacularly swallowing each other.

And thus, it gave birth to the chaos. The names of these vary, with their disastrous consequences and the resulting intensity varying at lengths. These are poverty, terrorism, corruption, and what not. Sufficient to say, somewhere, the contribution of education is evident. It is what it is, the ability to learn and prosper. The pathos lies in the subsequent condition that the knowledge falls in the hands of ravenous men hankering after that metaphorical throne which would bequeath its power to them, lest they understand it. And so, it falls into the hands of monarchs, the shrewd princes and kings, the capitalists benefiting from its subliminal society and warmongering pseudo-patriots.

As of 2019, approximately 9% of the world population was the portion of the 'degenerates' lurking in the murky shadows of poverty. These were the living cadavers looking too eagerly for any means to satiate their hunger, there brains in their hollow bellies. Our saints may have taught us to set ourselves free of our fleshly impulses, but when compulsions take over, the need to survive possesses what sentience remains of that brain, and the man succumbs to his monstrosity. Discipline can do little in such times, and Poverty is akin to that pestilence that spreads like an appalling plague, which spreads its rage amongst the persecuted, and dread upon the ignorant. It is that misery that holds the man from rising, lest standing upright.

Central African Republicssuffers from the deadly strikes of poorness. When poverty comes to mind, one may see the shades of Gray, of murky waters of drains, of ruinations of society in shapes of scattered concrete and shabby homes, with children and men in grubby robes and women with course hands, cracks on the feet and back aching, hunched over due to restless nights, of sunken, despondent eyes. Luxembourg contributes the most of global GDP per capita, hailed as the richest of all countries. But we look at our hungry nations, and we see what we still

lack that does not let us to come closer to a better future.GDP may not be the only measure to substantiate their potential or weakness, but by standard metric structure, one can efficiently employ the usage of Purchasing Power Parity (PPP) to assess an individual's buying power in the given country.

Similarly, civil disputes and riots lead to further deterioration to their societal structure. Where there is no balance, there can be no progress. Most religious fanatics feed off the power of their vehement beliefs which becomes their tool, their instrument of subjugation. From infancy they are groomed to become the perfect puppet, their mental prowess siphoned by these Leaders who in turn utilize their manpower for their own personal gains. While men are subjected to the brainwashing, to adopt the toxic masculinity that tragically, in time, begins to leech onto their sympathy and serenity, women continue to faithfully follow the tradition of tolerance, picking up their heirloom, the leash that binds them to their seemingly inescapable path. For they are not educated, they cannot comprehend, thus they cannot question. Furthermore, the little coherence they possess is silence by fear. Many religions and nations continue to suffer from torment, in name of nationalism and God. Islam and Judaism sees the worst of this suffering. Afghanistan, Syria and Yemen's global stand dwindles due to their violent civil riots and war.

Survival brings out the worst in men, and Africa struggles with stagnant crime activities, which over the past few years have led to great political and social concerns. Latin America too shows as crime continues to pose threat against collective global maturation, most prominent in Honduras, where 36 per 100,000 folks get murdered or assaulted, severity ranging from burglary to rapes and murders. South Sudan and Zambia take the top ranks among other Provinces or Countries as the prevalence of poverty and crime ravages the society.

However, taking our own home country, India, there are many faulty practices that causes such deterioration in human lifestyle. These are no cultural, or religious practices. These are society, psychological abuses. One can argue swiftly that this may be named as Gaslighting, Intimidation, Coercion coupled with physical violence, all of which culminates into a bigger, grotesque picture, a picture that depicts the furious backwardness of frail ego, ego that overpowers the potential of intellect and mocks education. For a long time, the primitiveness of unidimensional lives led by our population has caused this backwardness. We refuse to question, for we have openly bereft ourselves of the gifts of education bestowed to mankind. We worship the Champion of Mankind, Prometheus, the Almighty King who stole the fire from the Heavens and bestowed the gift of knowledge to men, who built the civilization upon that foundation. And while our scholars have found the cause so ludicrous in its nature, it is, albeit quite an austere matter of concern to us for how knowledge has been considered as much of a blessing as it is a curse placed upon our entirety of existence. Prometheus has paid the price of his ultimate betrayal with anguish and pain, the possibility of its abiding cycle remains ambiguous, and dare I say, unnerving. The Christian history has condemned the First Man and Woman to hell as they have stolen the gracious fruit of knowledge from the Garden of Eden. As much as we are imbued with gratitude by our elders to cater to our mind than to the whims of hearts, ironically, our myths and legends create a contradictory vision of how Gods may have feared our ultimate asset.

never-ending conflict? Most ... their ... leaders have acquired ... stagnant comfort and quite adequately, that the very tool of our evolution is used ... contorted, and distorted it in a manner that the subjugation of the masses to these ... naivety, to make us surrender to them. The subjugation of the masses to these ... Terrorists becomes the epiphany of our dystopia.

Unironically, and unfortunately, lack of education makes us nothing less than ... even worse, the sheep, herded by an incapable, destructive shepherd who venerates ... propre. They are swayed by charisma, charmed by comfort of a surreal existence, and ... by such promises, they live a life of falsity. As their conscience is still at an infantile ... are forever rendered vulnerable, at the mercy of a cruel God. Lack of understanding ... other greater obstacles, which soon become a wall hard to climb when left un... Gender-inequality, religious fanatics, addiction, etc. all result from people refusing ... sense and being led by a crueller, viler Machiavellian Monarch.

Education system is also to blame, with its faulty practices and lazy staff. ... scenario of corruption seeping through streets and cities, money rules. Money buys ... but not the mental efficacy. Most of the teachers are not mentally eligible to teach, where ... are mere ostentatious ornaments they adorn in an elite society, but cannot differ from ... 'their'. As old money rules, responsibility dies and decays from within. The worst effect ... are the backward ones; the villages, the girls, the poor class, who cannot think outside ... All they can see is money in their pockets and food on their tables. When one cannot ... beyond the dusty dark room, no one can expect to be enlightened.

But then, the question remains, that if the hunger is the first stage and poverty the ... progress, then how can we reach up to the secondary stage? How can one expect to thi... survival is not over yet? How can education bring about a change when the ones to change ... out of this perpetual misery?

The Supreme Leaders who sit above there are the only ones who can bring ... change, but for that, they must move away from the temptations of luxury and ... sympathize with the pain of the masses and understand, that it is their legacy which will ... their good deed. It is not the weight in their books, the thickness of them which will de... their influence, but rather how much of that lesson they can utilize to create another ... There should not be no such barriers as loans, diseases and differentiations which would ... a child to be bereft of his or her primary right; the right to learn, and prosper in a big wo... find where his or her place belongs. No child should be lurking in the shadows with a knife ... hand, ready to fight for another bite, but rather be sitting under a tranquil shade and be ... forward to the light of a new day, where the coming generation will admire and adore ... follow him to his golden path, liberated from the curse of the conflicts our own miseries ... created.

Asmita Gr...
M.A. E...
Roll No. 221...

ARCHITECTURAL MARVEL

Unveiling India's new Parliament Building

An icon of the country's democratic spirit, the new Parliament building, also symbolizes the spirit of self reliant India. The old Parliament house is almost 100 years old, and over the years, the parliamentary activities and the number of people working therein along with visitors, increased manifold.

It is a Proud moment for the country and people as they are now ready to realize their long cherished dreams. This building shows the power and advancement of the Indian democratic system, which has weathered all sorts of upheavals and struggle and has also beholds a myriad of historical milestones.

The building of New Parliament is in triangular shape. According to Architect Bimal Patel, the shape is also a nod to the sacred geometry in different religions. The idea of a new parliament house stemmed from the fear of stability of the previously existing one. This buildings, showcasing its exquisite artwork and featuring. a ceremonial sciptre called 'Sengol' construct at the cost of ₹ 971 crore. The Lok Sabha, based in India's national bird, the peacock will have an expanded seating capacity. This new complex doesn't feature a central Hall like the old Parliament House. It was built using green technology, the new building is supposed to reduce electricity consumption. As per the new Parliaments building codes, the building is primed to be earthquake safe, unlike the old one.

The Building is replite with national symbols, including the Lion capital of Ashoka which weights some 9,500 kg. The words of 'Satyameva Jayate' have been on the entrance. It has three main gates- Gyan Dwar, Shakli Dwar and Karma dwar and separate entrances for VIPS, MPs and visitors. The Building planners have drawn inspiration from temples and scriptures.

It has a wall, Jan Janani Janmabhoomi, painted by grassroot artists. There are also three galleries to showcase music, crafts and architecture. The building showcases the country's glorious heritage, with contributions from artisans and sculptors across the country.

It not only reflects India's cultural diversity but also paves the way for an inclusive and efficient democratic process.

As the nation embarks on this new chapter] the new parliament building becomes a beacon of hope and unity, inspiring generation to come.

Deepti
M.A. English-I

Implicit Prejudice - A Racism Within You

All carry different perspectives regarding prejudice within themselves. Can we say insecurity? Maybe, but can we call ourselves racist only for having this opinion in ourselves

Prejudice is a kind of conflict that plays out within everyone of us. This prejudi basically based upon our neurological and psychological process, also there is subtle unconscious behaviour that are generally influenced.

What basically racial prejudice means, this question arose in my mind but now practically understood that we cannot replace this particular term completely from our mind

According to Wikipedia, "A preconceived opinion that is not based on reason or a experience" is pronounced as prejudice. It is often used as when an unfair feeling or d emerged, being treated differently because of race, colour or religion this is called as r prejudice. It can happen anywhere. It can happen in school, at workplace or home within fam or relatives. Sometimes it is a part of structure system that we live in and sometimes r prejudice is subtle and different to notice. It is directly or indirectly about a person's colo race. To sum up all, racism is a prejudice against an individual because of race or ethnicity.

The term racial prejudice is divided into two types the one is explicit, consc prejudice. The other one is implicit (inherit), unconscious prejudice that guides our beha Explicit prejudice is basically old-fashioned racism. In 21 century a scientific evidence sugg that we are seeing the effects not of the explicit prejudice but of implicit bias; moreover preju is different in every corner of the society. In the wake of racially charged bloodshed in B Rouge Minneapolis and Dallas the city of Cleveland hosted the Republican Nat Convention. Steve King argued that only white had made the contribution in the civiliz while other subgroups did not. According to him, "The western civilization and the Amer civilization are the superior culture". Prejudice is deeply embedded in our society yet persistently misunderstood to a biological construct rather than a cultural one. "If we think o our species existing for at least a few 100,000 years it is only the last several century that w the historical emergence of the race" by Crystal Fleming a professor of sociology at Stony Br University and author of 'How To Be Less Stupid About Race'. Some prominent scien including Charles Darwin, dismissed to a biological basis of race over the next century. M scientists dedicated themselves to prove a false racial hierarchy that is white people superior to other races.

Also, over the past years, America has been reckoning with racism on a scale that ha been seen since civil rights movement. From sources, the killing of George Floyd, Ahm Arbery, Breonna Taylor and other sparkled protests against systematic racism and p violence that have drawn multiracial participation. For the very first time American attendi Black Live Matter- the movement has been active since 2013 and witnessed police b

behaviour physically. The individuals like Steve King influence can be limited by identifying them and finding the appropriate solution but the biasness within a person is irreplaceable.

My yearning for answers came from personal experience in the school. I was not aware of it is with meonly, but whenever I used to surround myself among pretty faces; I tend to feel low-key although I'm not. It is okay to be surrounded by people but one must not have implicit prejudice. I am also trying to not to compare with anybody, because nobody is you and you cannot be everybody.

As far as the explicit racism is concerned, the perspective towards this characteristic varied around 1950s, more white people seek to undo and confront racism in their lives. Actually, the evidences of this tendency emerged when attitudes or stereotypes became publicly frowned upon in 1960s and 70s. At that particular time many whites felt social pressure to not to get caught by saying something that sounded like racist. For instance, in 2008 study white participant who was about to discuss racial profiling with another participant who was a black, literally sat farther away from that person and that distance was all because of the fear of being perceived as racist. In these kinds of situation we create a self fulfilling cycle of negative racial interactions, moreover to avoid them we may avoid contact with the kinds of people altogether this is nothing but implicit prejudice. This dynamic, ironically can deep deeper racial segregation and inequality in the equitable society. This arises a question within themselves, "if I have implicit bias, does that mean I'm not really committed to fairness and equality? Am I at a deep unconscious level, actually a racist?"

In recent years implicit bias trainings organised, which aim to expose people to the negative stereotypes they hold and express unconsciously. This have been widely used to raise the people awareness of racism in workplaces. There are several ways to stop racism within you. Research proved that we cannot change the automatic process (including our implicit biases). All we can do is to learn new behavior that can become second nature. We must recognize that unconscious bias is no more "the real you" than your conscious values. You are both the unconscious and the conscious one. Try to acknowledge differences rather than ignoring them. Try to open for the world, accept the people and different opportunities to interact with them. Actually, expanding your point of view, just love yourself a little extra and try to accept that it natural to focus on how people are different from you and you are unique in your own way. "I decided I should not feel ashamed of who I am- nobody should ever feel ashamed of who they are". This bias is a part of structure in our mind. When you encounter examples of unambiguous bias, speak out for them. Why? because people around you provide some help, whom they see as target of these explicit or implicit biasness.

We can all potentially part of a problem but we can all become a part of solution too. As Deborah Cohansaid- "Humans are inherently adaptable. If we approach this movement responsible with humanity andhold each other accountable, we can change. Infact we must change."

Priyanshi Gaur
M.A. English - Ist Year

Woah! Men Empowerment

So this maybe a bit offensive topic for some people because Feminism and wo empowerment is the most discussed topic nowadays. But I feel that today's man is struggling with many problems and trying to fight these. But the sad thing is that even facing all the problems even after being upset he can't share his sorrow, his pain, his feel with anyone because if he does this, people will judge him, will tell him that he is crying li girl or he is trying to escape of he is giving excuse. We always hear that a man cannot feel pa man cannot cry. I am asking why? Why can't he? Isn't he a human. Is he a robot? who can't the pain and can't drop a tear. He is made with the same body organs that a female is made of seen it so many times that a male leaves his seat for females in transport services which is a gentle gesture, but please don't judge him if he doesn't do that because what if he is sick feeling good. I agree that women were treated like an object but today the condition of wom not same anymore. They have their own identity. They have the freedom to speak their mind.

The meaning of women embowerment was to bring women at par with men, d know how and when it turned into getting the highest closs from them. There is no one supe and inferior between men and women they compliment each other. I don't have any object feminism but fake feminism. Now days some female by playing the card of fake feminism their wrong things declared right for example we can see the fake case of domestic abuse aga the famous hollywood actor Johny Depp. As I earlier mentioned I don't have any proble issues with feminism but I've seen this destinction between men and women which is correct at all. Male is also a beautiful soul made by god he also has the same hunger of love respect as a female so let us not maintain this distinction and let us talk about real equality.

Nisha Has
M.A Eng
1st Y

Every age has its own poetry; in every age the circumstances of history choose a nation, a race, a class to take up the torch by creating situations that can be expressed or transcended only through poetry.

– Jean-Paul Sartre

To a mind that is still a whole universe surrenders

Life is about growing - especially from inside. If you've ever planted a tree, you know: water the root and the tree inside grows. Meditation can work as water of soul we need to achieve personal growth, a transformational process in which you consciously and continually improve your physical, emotional, intellectual and spiritual state. Meditation and life are not seperate. Meditation simply helps us to see and understand life more clearly. Planting a tree is an act of optimism. You do it with a sense of trust in the future You nuture the seed with hope, faith, and care and protect it from the elements. Then you let it grow. Growth happens naturally. You never push something to grow. The proper way to grow is by releasing growth. The same is true for spiritual and personal development. The recognition to continually develop yourself constitutes an essential part of your maturity, happiness and success. Simply put, self growth is a desire to become a better version of yourself everyday and throughout the whole of your life. The practice of meditation for personal growth acknowledges your desire to become a deeper person.

Is it possible to find peace within yourself in this busy world? Can you connect with inner quietness to help you make clearer and more effective choices in life? Meditation has long been recognised as an essential tool for spiritual development and personal growth. Whether it is through helping individuals to calm the mind, deeper their connection with the divine, or cultivate greater self-awareness. Meditation has been used by spiritual seekers for centuries to help them achieve greater peace and fulfillment in their lives. Meditation can be an extraordinary aid to a more satisfying and productive life. If you tried meditating, you'll know it is not easy to quiet the mind, but even beginning attempts actually help your outer life to work better for you.Quiet the mind and soul will speak. Meditation is not means to an end. It is both means and the end. Spiritual meditation is a profound practice that allows us to connect with our higher self and tap into the wisdom and guidance that resides within us. It is a journey of self-discovery, inner transformation and deepening spiritual awareness.

"om bhūr bhuvah svah
tat savitur varenyam
bhargo devasya dhīmahi
dhiyo yo nah prachodayat"

Let my mind and the whole existence be illumined and purified by your radiance.' Gayatri Mantra is the one who glides through the three states of consciousness joyfully, playfully, effortlessly and lightly, as though it were a song when we sing through something, it means itis not a burden us. Gayanti traayate iti gayatri'. The Gayatri mantra effects all the threestates of consciousness, jagrut (waking), sushput (deep sleep), swapna (dream) and the three layer of existence adhyatmik, adidhaivik and adibhautik. The chanting of Gayatri mantra sharpens the intellect ad brightens the memory A new mirror reflects clearly, but over the

timedust gathers and it needs cleaning ... with time company that we keep, the knowledge we receive and our latent tendencies. When chantGayatri mantra, it is like deep cleansing, so that the mirror (the mind) reflects in a ... wayThough the mantra, the inner glow is kindled, the inner plane is kept alive. One ... brilliance in both the and outer world. Praying is talking to universe, Vedic tradition, a ch... first initiated to the highest knowledge - the Gayatri mantra. After that all the forms of educ... are given. It is said in scriptures that women are also eligible to learn the Vedas and chan... mantra. Chanting Gayatri mantra rejuvenates the mind and maintains it in an elevated ... energized state. Energizing from source of radiance - that is Gayatri mantra. The scintilla... lively energy that is Gayatri Shakti.

Mahima Bhardwaj
MA English Previous

"The bourgeois biologist wastes his time in seeking a general explanation for the change of living matter. The dialectical biologist seeks no such general explanation for a change in any part of reality, for change is what reality is. What the dialectical biologist seeks is the determining relations between the new qualities emerging in that change."

— Christopher Caudwell

World Peace

Imagine there is no heaven
It is easy if you try
No hell below us
Above us only sky....

Imagine all the people
Living for today...

Imagine all the people
Living for today...

Imagine there is no countries
It isn't hard to do
Nothing to kill or die for
And no religion too

Imagine all the people
Living life in peace, you
You may say, I'm a dreamer
But I'm not the only one

I hope some day you will join us
And the world will be as one

Imagine no possessions
I wonder if you can
No need for greed or hunger
A brotherhood of man

Imagine all the people
Sharing all the world, you
you may say I'm a dreamer
But I'm not the only one

I hope some day you'll join us
And the world will be as one...

Nisha Kur
B.A. IVth Sem

Postmodernism is, of course, the dead end from which hauntology starts - but one of its role is to denaturalise what postmodernism has taken for granted, to conceive of postmodernism as a condition in the sense of a sickness.

– Mark Fisher

A work can become modern only if it is first postmodern. Postmodernism thus understood is not modernism at its end but in the nascent state, and this state is constant.

– Jean-Francois Lyotard

VIRTUAL EDUCATION: IT'S CHALLENGES and ADVANTAGES

Life- an uncertain journey,
Full of adventures, surprises and hurdles,
Challenges often come with a why,
Facing them is worth a try
Covid-19, world's biggest challenge,
Paused the world in every corner,
Education, society's crucial part,
Got the chance to rise with a refresh start
Virtual became the new reality,
Brought the students, teachers together again,
Social networking took the place,
To match with each and every person's pace
Virtual education came as a 'boon' in disguise,
It introduced us to future life,
"Challenge' is to accept the education virtually,
Apply practically and train the students accordingly
Problem with the internet access,
Doesn't accompany the education purpose,
Teachers, students not under the same roof,
Saddened the mood under every roof

Lavanya Madan
BCA-3

Works of imagination should be written in very plain language; the more purely imaginative they are the more necessary it is to be plain. Good and bad men are each less so than they seem.

– Samuel Taylor Coleridge

The Thriving Indian Startup Ecosystem

A journey to innovation and growth.

The global startup landscape has witnessed significant growth over the past decade, w many countries, locking horns to become centres of innovation.

However, one ecosystem stands out among the rest: INDIA. From a nation known fo traditional industries, India has emerged as a global hub for innovation and entrepreneurship

The seeds of India's startup revolution were sown in the rarly 2000's when a few visio entrepreneurs migrated into uncharted territories companies like Flipkart, founded in 2007, Paytm established in 2010, framed the way for others by demonstrating that Indian star could compete with global giants. Several factors have contributed to the rise of India's sta ecosystem. India's large and youthful population provides a vast market and a pool of t eager to explore the entrepreneurial ventures, the widespread adoption of smartphones and intimate has created new opportunities across various sectors.

Governmental programs like "STARTUP INDIA" launched in 2016 have provided cr support, including tax benefits and ease of doing business for startups.

India has witnessed an escalation in unicorn startups i.e. companies valued at ove Billion. Notable unicorns include Flipkart, BoAt, Paytm, OLA, Byju's and Zomato. Th unicorns have not only attracted global attention but have also infused capital and expertise into the ecosystem.

The diversity of India's startup ecosystem is an evidence of its stringer some prom sectors include:

E-COMMERCE: companies like Flipkart, Amazon India have transformed the way we

FINTECH: Payment Gateways, digital wallets like Paytm, Phone Pe have disrupted financial sector.

EDTECH: Byju's, unacademy are revolutionizing education by making quality ed accessible to millions.

HEALTHTECH: Startups like Pharm Easy and practo are bridging gaps and ma health care more accessible.

While the Indian startup presents immense potential, it is not devoid of challe egulatory bureaucratic hurdles and talent acquisition. However, these challenges present opportunities for startups.

India's startup coohom has made remarkable progress. Though the challenges are ther ian entrepreneurs will indeed drive the ecosystem forward making it an attractive pro investors seeking investment opportunities.

Mah
M.A. English (1st Seme

About 'Think India'

'Think India' is a pan-India organisation run by students from national educational institutions established with the aim to bring together the best talent of the country and to infuse in them a "Nation-First" attitude. The organisation seeks to develop solution based thinking and inspire young India to serve society. It strives to promote social harmony, fulfill the needs of India and support gender justice.

It is an active forum of researchers, professionals, and students where they debate on national issues, raise their concerns and offer innovative solutions to problems. It is a platform for the "Leaders of Tomorrow" where they deliver on issues of national importance, raise their concerns and offer innovative solutions to the problems faced by India.

Think India felt the need to bind the students with an Indian nationalistic string to harness this part of national treasure in furthering our aim of national reconstruction. Students from IISC, IIMB, NIMHANS joined together to create a joint jorum for the students from premier institutes of India in 2006, A formal forum took place at the Art of Living Ashram, Bengaluru in 2007. Think India has been organised past 20 editions successfully every month. It is one of the Think India's flagship initiatives to further its goal of infusing 'Nation-Fist' thinking in the young talent of this nation. More than 6,800 students, academicians and research scholars across the country have participated in the previous editions of Think India. A collective endeavor of creative minds brimming with brilliance and social concern, who are willing to dedicate themselves in thought and action to the cause of national rejuvenation.

Think India celebrates the best brains in the service of the Nation. Think India gives a clarion call to those who believe they can make a difference to create a happy society, a developed nation in all aspects and a better world.

Sakshi
Roll No. 221034152036
M.A. English Hons (3rd semester)

Beauty of Nature

The most beautiful creation of God that exists all around us is nature, which is s being essence of everything.

Water, air, plants & many other things have been given to us by nature so that survive on this earth. A person with a sense of beauty will never be able to overlook the spl of the twinkling stars & the crimson light of the rising sun.

The beauty of nature has inspired many aristic people to compose verses of p should their creative side with paints & brushes write beautiful prose & capture the bea nature with a camera forever.

Nature & Air Pollution

Mother nature is responsible for our very existence as humans, but we don't see recognise this unique truth or show her any respect. Instead we are polluting our environ Use of natural resources increases as the population grows. Coal & petroleum are in g demand due to the growing manufacturing sector, however they pollute the air. The a breathe has been tainted by smoke released from industries & automobiles.

We must plant more trees if we want to lessen the impact of harmful air pollutants as carbon monoxide, sulphar dioxide, nitrogen dioxide etc. Mother nature is constantly b abused by mankind, who don't even consider the repercussions.

Nature & its seasons

The beauty of the changing seasons has captivated people attention for millannia & do so till the end of time.

Unquestionably the queen of the seasons, spring is the most beautiful of them all. planet is awash in vibrant colours, lustrious plants, & aromas during this time. Autuints col are golden, brown & nature. A life that started in the spring maters in the fall. A season that a ripening is summer. The most delicious furits vegetables are only some of oare beautiful bec of the crisp stay & the snow-capped mountains.

Enjoy Nature

We can all appreciate nature's beauty as we perceive it. You could either go for an morning stroll or evening joy, both of which would put you in close proximity to nature & a you to take in its beauty. Visit beaches, hill towers & far-off locals with your friends & fami

take in the breath walking down or sunset.

How to preserve Nature

- Reduce your consumption, reuse what you can, and recycle instead of throwing away.
- Volunteer for cleanups in your community
- Help others understand the importance & value of our natural resources.
- The less water you use, the less runoff & waste water that eventually end up in the ocean.
- Switch off tights & fans when you leave the room.
- Trees provide food & oxygen. They help save energy, clean the air, & help combact climate change.

My trip to a Hill Station

I went to a beautiful hill station in the middle of the summer holidays with my family. The scenic views along the route kept me amused despite the lengthy trip. As we climbed higher, I could see dense trees & foggy mountains. I was also mesmerised by the curving roads, which made me feel as though I had stepped into another realm. I fell in love with nature as soon as we arrived since it had been kept in its natural state, complete with fresh, fragrant flowers of all types, a mild atmosphere, & lust vegetarian. A I wandered amidit thus beautiful lanscape, I realised that all of my troubles had vanished left so refreshed, calin & happy.

Everything we do is dependent on the natural world. We entirely rely on water & fire for our life. The natural resources of the beauty of nature provides a sense of comfort to us.

न जायते म्रियते वा कदाचिन्ना. यं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो. न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

अर्थात् :– आत्मा किसी काल में भी न जन्म लेता है और न मरता है और न ही यह एक बार होकर फिर अभावरूप होने वाला है। आत्मा अजन्मा, नित्य, शाश्वत और पुरातन है, शरीर के नाश होने पर भी इसका नाश नहीं होता।

—श्रीमद्भागवत गीता

To Travel is to Live

St. Augustine's famous saying, "The World is a book and thus who do not travel
only one page." encourages us to broaden our horizons through travel. As we all know, Ind
one of worlds most famous Countries for its unique destinations. Tourism in all coutries pla
big role in the economic growth and development of a country. If we see tourism in India
India's second largest source of income through the foreign currencies of foreign tourists.

Our country is naturally and culturally enowed with many beautiful and attrac
places that have fascinated people around the world. Our country is one of the rich coutries w
legacies, historical monuments, forts, beaches, religious places, mountains, resorts etc. Ind
known for its unity in diversity that enriches it with people from many cultures, traditions
religions which is the big reason for good tourism here. Our country is full of diversit
handicrafts, folk dances, fairs, festivals, music, ballet, clothing, eating habits, lifes
languages etc. Which give rise to the desire in the hearts of the people of the world to see India

Travelling is a tiring and difficult thing and not everyone is able to travel but at the sa
time, it is a fun activity that takes your tiredness away. Travelling adds flavour to life as
travel to different places that have a different culture and lifestyle.

Tourism not only benefits the government but also the people that live in the local a
It also creates a business as well as employment opportunities for the local people wh
celtimatuy help the government to earn income.

In order to encourage people, a tourism campaign name "Incredible India"
launched by the Indian Tourism Development Corporation (ITDC) in 2005. The tourist spo
India has also been divided into sections like spiritual tourism. Ecotourism, Spa tour
Adventure tourism to encourage tourism and better growth in India.

In conclusion, we can say that tourism is a very productive activity both for the tou
and government. As they support each other simultaneously. Tourism is one of the fas
growing industry in the world that has changed the scenario of the World.

Ka
MA English (1st Semes

Darkness of Black

Darkness prevailing our soul
This heaviness is consuming me whole,
Deep under the blue Waves
Something that is mysterious each says,
Diving into the deep darkness
Eound myself drawning in mess,
Cold thing touches my skin
I am drowning don't know where in,
There come some blurry images
The heavy past unfolding its pages,
Deep down in slumber pain
Forgeting it won't make any gain,
seeing afar a thing, shining so bright
Heaviness decreases, take truth now the light ,
Souls feel light, body is at ease
What is the state called, when sleep takes place.
I am delivering our .....

Kajal
MA English Previous

Patriotism

One day a question stuck in my mind ' What is patriotism?' the question got different ans
from different sides.
One says:
One's duty towards his nation
Another says:
Saving country is one's passion
But with cloudy thought a storm comes in my mind.
Every action for nation is patriotism
And to have wish to sacrifice all
my life, for nation with honour.
O my Beloved motherland
Its Patriotism, Patriotism, Patriotism....

Gargi S
B.Sc. (Non Med
2nd

वह अचल, अचलायमान एकमेव ब्रह्म मन से वेगत्तर, अत्याधिक वेगवाला है। उस ब्रह्म तक देवता नहीं पहुँच पाते, क्योंकि वह सदैव उनसे आगे–आगे पहुँच जाता है– पहुँचा होता है। वह ठहरा हुआ भी दौड़ते हुए दूसरों को पार कर आगे निकल जाता है। उस तत् में जीवन–शक्ति का स्वामी वायु जलधाराओं को स्थापित करता है।

उपनिषद

Music has the power to heal

Music is a form of a melody that soothes in to our body and helps us to full refreshed and relaxed. It helps us to get rid of the anxiety and stress of our everyday life. Music is undoubtedly a great way of healing the pain. It makes us forget about unpleasant and distrubing thoughts by taking us in the world of melody.

Music can bring back the old memories in our present time. Music therapy restores us from several problems and emotions in our daily life. When we attend music therapy it helps our brain functioning quicker and helps us keep calm. Whatever problems we may have, that will flow out of our brain. Music allow us to feel joy, sadness and fear. It can bring us pleasure, express what we cannot express in words. not only music affect our mind but it affects our bodies as well.

Music can aid in recalling memories, affect our emotions and moods, and suprisingly enough, have various health benefits. Music plays an important role in one's memory. Also, studies have shown that music therapy can loner the stress harmonic cartisd. It can improve heart and breathing rates, as well as anxiety and pain in cancer patients. In the filed of psychology, music has been used to help people suffering from depression and sadness also, for children with developmental disabilities, music can be healing. Playing soft music in the background while working at one's desk has also been found to reduce stress, reduced heart rates and higher body temperatures. Studies also suggest that music can boost mental and physical stimulation, and increase overall performance. It has also been used to help communication, coping up of feelings such as fear, loneliness and anger in patients who have a serious illness.

In the end, music is a gift of God. Music as a hobby is the best alternative indeed. Music is an effective way of healing the stress of anyone of any age. It is highly effective and supportive to relieve the person from any kind of mental or physical problem. So, we all be always live with music.

Jisha
B.A., English Hons

Water Conservation

Are we even doing anything? We know how water, an essential resource on w... entire human race depends on is becoming scarce. There are lakhs of people in India w... already facing the crisis of irregular water supply or are living without clean drinking wa... a result citizens are getting affected by waterborne diseases. Even though we have been ... about water conservation since the early years of our lives, yet the contribution from ev... is not as significant as it should be.

Around 71% of the earth's surface is covered by water out of which, 97%. is the ... water of oceans and seas which is unfit for drinking. The remaining 3% of drinkable ... comes from stream, ponds, lakes, and rivers. Rapid urbanization irregular mons... expeditious use of groundwater and unchecked sewage has further pushed the country ... dire strait and has made it quite hard to quench the thrist of the population. Today ... situation of, Where the world is headed towards a water crisis and the day is not far enou... another country or a major city to become the next cape Town.

As a citizen, It is our fundamental responsibility to supplement the efforts ... governments and organization with water while washing clothes and utensils, brushing ... and bathing and farming is the first step in this. Schools and offices should start planti... many trees as possible, NGO's must come up many with plausible solutions and sp... awareness amongst masses about the importance and the techniques to conserve wat... every problem, there is a solution and here, it is "we". In order to bring out the change ... actions need to be changed. We should understand the importance of water conservation i... the fact that now only 1% of water ir left on earth. And if we continue to waste it like this a... sources of water will be exhausted in future.

Miss Pra...
B.Sc. 2nd ...

World Peace

Imagine there is no heaven
It is easy if you try
No hell below us
Above us only sky....

Imagine all the people
Living for today...

Imagine all the people
Living for today...

Imagine there is no countries
It isn't hard to do
Nothing to kill or die for
And no religion too

Imagine all the people
Living life in peace, you
You may say, I'm a dreamer
But I'm not the only one

I hope some day you will join us
And the world will be as one

Imagine no possessions
I wonder if you can
No need for greed or hunger
A brotherhood of man

Imagine all the people
Sharing all the world, you
you may say I'm a dreamer
But I'm not the only one

I hope some day you'll join us
And the world will be as one...

Nisha Kum
B.A. Final Y

Postmodernism is, of course, the dead end from which hauntology starts - but one of its role is to denaturalise what postmodernism has taken for granted, to conceive of postmodernism as a condition in the sense of a sickness.

– Mark Fisher

A work can become modern only if it is first postmodern. Postmodernism thus understood is not modernism at its end but in the nascent state, and this state is constant.

– Jean-Francois Lyotard

संस्कृत–अनुभाग – रमणीक (2022–2023)

संपादक – डॉ. वजीर सिंह

सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)

छात्र संपादिका – राखी

बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

1.	सम्पादकीयम्	डॉ० वजीर सिंह सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग
2.	नीतियुक्त दोहे	अनीता साहू, तृतीय वर्ष
3.	नीतियुक्त दोहे	प्रिया यादव, तृतीय वर्ष
4.	यौतुकम्	अंजली यादव, बी.सी.ए. द्वितीय वर्ष
5.	विद्यार्थीजीवनम्	निशा, बी.सी.ए. द्वितीय वर्ष
6.	संस्कृत भाषाया: महत्वम्	सीमा, बी.ए. अन्तिम वर्ष
7.	महिलानां शिक्षा	ताशू शर्मा, बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
8.	परोपकार:	राखी, बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
9.	महाकवि: कालिदास:	मुस्कान, बी.एस.सी. नॉन मेडिकल
10.	पर्यावरणम् संस्कृत निबंध	अंजु, बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
11.	पर्यावरणम्	महक, बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
12.	मम प्रिय: उत्सव दीपावली	सिमरन, बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
13.	प्रकृति:	सपना, बी.सी.ए. द्वितीय वर्ष
14.	विद्याधनं सर्वप्रधानम्	निशा, बी.सी.ए. द्वितीय वर्ष
15.	पर्यावरणम्	सोनिया, बी.सी.ए. द्वितीय वर्ष
16.	जीवनम् एक: स्पर्धा अस्ति	प्रिया कुमारी, बी.एससी. (द्वितीय वर्ष)

विद्या धनं सर्वधनं प्रधानम् इति सर्वैः स्वीक्रियते, यतोहि विद्या एव सर्वजनाः सर्वाणि कार्याणि साधयितुं समर्था भवन्ति। विद्यां प्राप्य उन्नतिं कीर्तिं सुखसमृद्धि च लभन्ते विद्वांसः। यदुक्तं केनचित् –

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुक्ते,
कान्तेव चाभिरमयत्यपनी खेदम्।
लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिं
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।।

विद्या धनं व्ये कृते वर्धते, संचायत् च क्षयम् आप्नोति, एतस्माद् इदं अपूर्वम् एव धनं। अतः एवोक्तम्-

अपूर्वः कोऽपि कोषोऽयं विद्यते तव भारति।
व्ययतो वृद्धिमायति क्षयमायाति संचयात्।।

नृपाः राष्ट्रपतयः मुख्यमंत्रिण प्रधानमंत्रिणोऽपि विविधविषय विशेषज्ञानां कवीनां, वैज्ञानिकानां मतिमतां, विदुषां समादरं कुर्वाणाः तेषां उत्साहवर्धनं कुर्वन्ति पुरस्कारैः। अतः अस्माभिरपि विद्या पूर्णमनोयोगेन पठनीया, ग्रहणीया कर्तव्यम्। विद्या वर्तमान युगे अत्यावश्यकम् अस्ति। तस्य कल्पलतारूपी विद्याःसाधना प्राप्यर्थं महाविद्यालयस्य पत्रिका "रमणीके" महाविद्यालयस्य प्राचार्य डॉ सम्पादकस्य माध्येन तिसृषु (संस्कृत, हिन्दी आङ्गलभाषा च) भाषासु बालिकानाम् स्व मौलिक रचनानां प्रकाशनं कारयति तान् नवीन ज्ञानार्जित् कर्तुं प्रति एकः अतुलनीय प्रयासोऽस्ति। अन्तेऽहं अयमेव वदिष्यामि –

ॐ सह नाववतु। सहनौ भुनक्तु।
सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतस्तु मा विद्विषावहै।।
(कठोपनिषद् कृष्ण यजुर्वेद)

जयतु संस्कृतं, जयतु भारतम्।

डॉ० वजीर सिंह
सहायक प्राध्यापक
संस्कृत विभाग

नीतियुक्त दोहे

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः।
नैनं कलेदयन्त्यापो, न शोषयति मारूतः।।

कर्मण्येवाधिकरस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा तै सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

ऐषा ब्राह्मी स्थितः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति।।

प्रजहाति यदा कामन्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते।।

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।।

अनीता साहू
तृतीय वर्ष (सेमेस्टर-5)
अनुक्रमांक - 536

नीतियुक्त दोहे

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारूतः।।

नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः।
अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते।।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारूतः।।

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम्?

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते।।

दुखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृह।
वीतरागभयक्रोध स्थितधीर्मुनिरूच्यते।।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।।

"तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।।"

प्रिया यादव
तृतीय वर्ष (सेमेस्टर-5)
अनुक्रमांक - 246

यौतुकम्

कन्यायाः विवाहे कन्यापक्षात् यद् द्रव्यं वस्तुजातं वा दीयते तद् यौतुकम् इति उच्यते। प्राचीनकाले कन्यायाः विवाहे उपहारदानस्य प्रथा आसीत्। परमद्य तु वरस्य योग्यतानुसारं मूल्यम् अनिवार्यतः अपेक्ष्यते। इदं मूल्यम् अनेक सहस्त्र लक्षात्मकं च भवति। एतस्मिन् यदि कदाचित् न्यूनता भवति तर्हि पति गृहे वधूः बहुशः प्रताड्यते कैश्चित् अर्थापिशाचैः प्राणैः अपि विमोच्यते।

एतेन यौतुककारणेन कीदृशी दयनीय स्थितिः कन्यायां संजाता यत् सुशिक्षितां सुशीलामपि कन्याम् अर्थाभावे मूर्खाय अयोग्याय वराय दातुं मातपितरौ विवशौ भवतः। बहुशस्तु पर्याप्तं यौतुकं दत्वापि मातापितरौ पतिगृहे स्वपुत्र्याः विषये सर्वथा आश्वस्तौ न भवतः। यतोहि वध्वाः यातनायाः मृत्योः च भूरिशः समाचाराः समाचारपत्रेषु प्रतिदिनम् आयान्ति।

यौतुकं सभ्यसमाजस्य कलङ्कः अस्ति। एतत् परिहाराय प्रबुद्धः युवकैः अग्रे आगन्तव्यम तथा यौतुकरहित विवाहस्य प्रयासः करणीयः।

अंजली यादव
बी.सी.ए. द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक - 113

पहले पांच सालों में अपने बच्चे को बड़े प्यार से रखिये। अगले पांच साल उन्हें डांट-डपट के रखिये। जब वह सोलह साल का हो जाये तो उसके साथ एक मित्र की तरह व्यवहार करिए। आपके वयस्क बच्चे ही आपके सबसे अच्छे मित्र हैं।

– आचार्य चाणक्य

विद्यार्थीजीवनम्

छात्र जीवनमेव मानवजीवनस्य प्रभातवेला आधारशिला च वर्तते। समस्त जीवनस्य विकासस्य ह्रासस्य वा कारणम् एतज्जीवनमेवास्ति। वस्तुतः विद्यार्थिजीवनं साधनापूर्ण जीवनम् अध्ययनं परमं तप उच्यते।

छात्रजीवने परिश्रमस्य महती आवश्यकता वर्तते यः छात्रः आलस्यं त्यक्त्वा परिश्रमेण विद्याध्ययनं करोति स एव साफल्यं लभते। अतएव छात्रै प्रातः काले ब्रह्ममुहूर्ते उत्थातव्यम् कस्मैचित् कालाय भ्रमणाय अनिवार्यम्। ततः प्रतिनिवृत्ति स्नानसन्ध्योपासनादिकं विधाय अध्ययनं कर्त्तव्यम्।

निशा
बी.सी.ए. द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक - 553

साल–भर सांप दिखे तो उसे भगाते हैं, मारते हैं। मगर नागपंचमी को सांप की तलाश होती है, दूध पिलाने और पूजा करने के लिए। सांप की तरह ही शिक्षक दिवस पर रिटायर्ड शिक्षक की तलाश होती है, सम्मान करने के लिए।

– हरिशंकर परसाई

संस्कृत भाषायाः महत्वम्

सम्यक परिष्कृतं शुद्धमर्थाद् दोषरहितं व्याकरणेन संस्कारितं वा यत्तेदेव संस्कृतम्। एवञ्च सम्–उपसर्गपूर्वकात कृधातोर्निष्पन्नोऽय शब्द संस्कृत भाषेति नाम्ना सम्बोध्यते। सैव देवभाषा गीर्वाणवाणी, देववाणी, अमरवाणी, गीर्वाणित्यादिभिर्नामभिः कथ्यते। इयमेव भाषा सर्वासां भारतीयभाषाणां जननी, भारतीयसंस्कृतेः प्राणस्वरूपा, भारतीयधर्म–दर्शनादिकानां प्रसारिका, सर्वासामपि विश्वभाषासु प्राचीनतमा सर्वमान्या च मन्यते। अस्माकं समस्तमपि प्राचीनं साहित्यं संस्कृतभाषायामेव रचितमस्ति, समस्तमपि वैदिक साहित्यं रामयणं महाभारत पुराणानि दर्शनग्रन्थाः स्मृतिग्रन्थाः काव्यानि नाटकानि गद्य–नीति–आख्यान्ग्रन्थाः अस्यामेव भाषायां लिखिताः प्राप्यन्ते। गणितं, ज्योतिषं, काव्यशास्त्रमायुर्वेदः, अर्थशास्त्रं राजनीतिशास्त्रं छन्दः शास्त्रं भान–विज्ञानं तत्वजातमस्यामेव संसकृतभाषायां समुपलभयते। अनेन संस्कृतभाषायाः विपुलं गौरवं स्वमेव सिध्यति।

सीमा
बी.ए. अन्तिम वर्ष
अनुक्रमांक - 2947620345

मानव जाति दो प्रकार के लोगों से बनी है – बुद्धिमान लोग जो जानते हैं कि वे मूर्ख हैं और मूर्ख जो सोचते हैं कि वे बुद्धिमान हैं।

– सुकरात

अस्माकं समाजः न केवल पुरुषाणां, किन्तु नारीणामपि अस्ति। अतः सु
समाजे पुरुषाणां शिक्षा आवश्यकी अस्ति तथा स्त्रीणामापि। स्त्रीणाम् समाजे
समानरूपेणास्ति। समाजस्थस्य द्वे चक्रे स्तः। यथा एकेन चक्रेण रथस्य गतिः अ
अशिक्षिता नारी संसाररथं कथं चालयति। अतः स्त्रीशिक्षा अतीवावश्यकी।

प्राचीनकालेऽपि स्त्रीशिक्षा अनिवार्या आसीत्। वैदिककाले नार्यः अधिकशिक्ष
आसन्। गार्गी, मैत्रेयी आद्याः विदुष्यः वेदशास्त्रार्थनिपुणाः आसन्। कालिदासस्य
विद्योत्तमा महती विदुषी आसीत्। आधुनिककाले स्त्रियः शिक्षणमनिवार्यम्। यदि मा
सुशिक्षिता भवेत् तर्हि सा स्वपुत्राणां पालनं शिक्षणमं च सुचारुरूपेणा कर्तुं शक्नोति। यदि स
अशिक्षिता, तर्हि तस्याः सन्तानमपि विद्याहीना, संस्कारहीना च भविष्यति। शिक्षिता नारी
अधिकयोग्यता गृहकार्यसंचालने समर्था भवति।

अद्य एकमपि क्षेत्रं नास्ति, यत्र नार्याः प्रभावं नास्ति। विद्यालयेषु, महाविद्यालयेषु
कार्यालयेषु, सर्वत्र नार्यः कार्यरताः सन्ति। किं बहुना अनेकाः नार्यः संसदसदस्याः सन्ति,
नगरपालिकासु, विधानसभासु, लोकसभासु अपि सदस्याः सन्ति, ताः सुचारुरूपेण कार्य
कुर्वन्ति च।

कुलस्य तथा समाजस्य उन्नत्यर्थं स्त्रीशिक्षा अनिवार्या खलु। यतः शिक्षिता नारी न
केवलं स्वजीवनं सफलीकरोति, किन्तु सा परिवारस्य राष्ट्रस्यापि अभ्युदयं करोति।
सुशिक्षिता नारी सर्वत्र पूज्यते। उचितमिदं कथितं यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।

ताशू शर्मा
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक - 25

परोपकारः

परेषां उपकाराय कृतम् कर्म उपकारः कथयते। अस्मिन् जगति सर्वेजनाः स्वयं सुखं वाञ्छन्ति। अस्मिन् एवं जगति एवविधाः अपि जनाः सन्ति ये आत्मनः अकल्याणं कृत्वाऽपि परेषां कल्याणं कुर्वन्ति। ते एवम् परोपकारिणः सन्ति। परोपकारः दैव भावः अस्ति। अस्य भावस्य उदयेन एव समाजस्य देशस्य च प्रगतिः भवति। अनेकेनाः परोपकर्मणि रताः दृश्यन्ते। मेघाः परोपकाराय जलं वहन्ति। नद्यः अपि स्वीयं जलं न स्वयं पिबन्ति। वृक्षाः परोपकाराय एव फलानि ददन्ति एवं हि सज्जनाः परोपकाराय एव जीवनम् धारयन्ति।

आत्मार्थं जीवलोकेऽस्मिन् को न जीवति मानवः परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति।

राखी
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक - 314

नैतिक व्यवस्था, जो सापेक्ष भावनात्मक मूल्यों पर आधारित होती है, मात्र एक भ्रम है। पूरी तरह से अश्लील अवधारणा है जिसमें कुछ भी दृढ़ नहीं है और कुछ भी सच नहीं है।

आपका दिमाग ही आपका उपदेशक है, यह हमेशा परिवर्तन से मुक्त रहना चाहता है। दर्द से मुक्त, जीवन और मृत्यु के झंझटों से मुक्त। लेकिन परिवर्तन ही संसार का नियम है और कोई भी मान्यता इस सच्चाई को बदल नहीं सकती।

— सुकरात

महाकविः कालिदासः

पुराकवीनां गणनाप्रसंगे, कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः।
अद्यापि ततुल्यकवेरभावात् अनामिका सार्थवती बभूव।।

न केवलं भारतीयदृष्ट्या किंतु पाश्चात्यदृष्टया अपि, संस्कृत-साहित्ये महाकवेः कालिदासस्य अद्वितीयं स्थानमस्ति। सः कविकुलगुरूः अस्ति। इंग्लैण्डवासिनः तं द्वितीयं शेक्सपीयरं कथयन्ति। विश्वसाहित्येऽपि कालिदासस्य कवित्वं ससम्मानं गीयते। अतएव विश्वस्य सर्वासु अपि मुख्यासु भाषासु एतस्य रचनानाम् अनुवादः अभवत्। भारतीयपरंपरानुसारं कालिदासः विक्रमादित्यस्य राजसभायाः पण्डितः आसीत्।

कालीदासः राज्ञः विक्रमादित्यस्य नवरत्नेषु एकः आसीत्। कालिदासस्य निम्नाङ्किता ग्रंथाः सन्ति-रघुवंशम्, ऋतुसंहारम्, मेघदूतम्, कुमारसम्भवम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् अभिज्ञानशाकुन्तलम् इति। एषु कुमारसम्भवम् रघुवंशं च महाकाव्ये स्तः। मेघदूतं, ऋतुसंहारम् च द्वे खण्डकाव्ये स्तः। त्रीणि नाटकानि-मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, अभिज्ञानशाकुन्तलं च। नाटकेषु अभिज्ञानशाकुन्तलमद्वितीयमस्ति। सर्वेषाम् अपि रसानां सफलः परिपाकः रघुवंशे दृश्यते। कालिदासस्य उपमाः प्रसिद्धाः सन्ति 'उपमा कालिदासस्य' इति। कवेरलंकारप्रेम सीमित रूचिकरम् च अस्ति। चरित्रचित्रणे कालिदासः अद्वितीयोऽस्ति। कविकुलगुरुः कालिदासः संस्कृतसाहित्यस्य भारतस्य च उत्कृष्टम् रत्नमस्ति।

मुस्कान
बी.एस.सी. नॉन मेडिकल
अनुक्रमांक – 327

पर्यावरणम् संस्कृत निबंध

अस्मान् परितः यानि पञ्चमहाभूतानि सन्ति तेषां समवायः एव परिसरः अथवा पर्यावरणम् इति पदेन व्यवह्रीयते। इत्युक्ते मनुष्यो यत्र निवसति यत् खादति, यत् वस्त्रं धारयति, यज्जलं पिबति यस्य पवनस्य सेवनं करोति, तत्सर्वं पर्यावरणम् इति शब्देनाभिधियते। अधुना पर्यावरणस्य समस्या न केवलं भारतस्य अपितु समस्तविश्वस्य समस्या वर्तते। यज्ज्लं यश्च वायुः अद्य उपलभ्यते, तत्सर्वं मलिनं दूषितं च दृश्यते अथवा भारतस्य राजधानी अस्ति। पर्यावरणम् पश्यतु। भारतस्य राज्येषु अन्यतमम् अस्ति। पर्यावरणम् भारतदेशस्य राजधानी विश्वस्य अतिविशालासु नगरीषु अन्यतमा इति गण्यते। पर्यावरणम् ऐषा भारतस्य, तृतीया बृहती नगरी वर्तते। इत्यपि विश्रुता इयं नगरी प्राचीनकाले हस्तिनापुरमिति ख्याता आसीत्। इन्द्रसभायामपि सभाजितानां भरतकुलोत्पन्नाना महीपालानां राजधानी अद्यतनीया एव। पर्यावरणम् मुगलवंशीयाना चक्रवर्तिनाम् तथा आङ्गलानामपि अधिकारियां केन्द्र भूमिर्भूत्वा अधुनापि भारतीयगणराज्यस्य राजधानी पदमलङ्करोति।

अंजु
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक – 237

भारत एक ऐसी भूमि है जहां आज भी आदर्शवादियों और बौद्धिकों का सम्मान किया जाता है। यदि हम भारत को उसकी आत्मा बचाए रखने में मदद करें, तो इससे हमें अपनी आत्मा को बचाए रखने में मदद मिलेगी।

– मार्टिन लूथर किंग

पर्यावरणम्

अस्मान् परितः यानि पञ्चमहाभूतानि सन्ति तेषां समवायः एव परिसरः पर्यावरणम् पदेन व्यवह्रीयते, इत्युक्ते मनुष्यो यत्र निवसति, यत खादति, यत् वस्त्रं धारयति, यज्जलं पिबति पवनस्य सेवनं करोति, तत्सर्वं पर्यावरणाम् इति शब्देनाभिधियते अधुना पर्यावरणस्य समस्या केवलं भारतस्य अपितु समस्तविश्वस्य समस्या वर्तते। यज्जलं यश्च वायुः अद्य उपलभ्यते मलिनम् दूषितम् च दृश्यते अथवा भारतस्य राजधानी अस्ति। पर्यावरणम् पश्यतु।

भारतस्य राज्येषु ज अन्यतमम् अस्ति। पर्यावरणम् भारतदेशस्य राजधानी अतिविशालासु नगरेषु अन्यतमा इति गण्यते। पर्यावरणम् एषा भारतस्य तृतीया बृहती नगरी इत्यपि विश्रुता इयं नगरी प्राचीनकाले हस्तिनापुरमिति ख्याता आसीत्। इन्द्रसभायामपि सभा भरतकुलोत्पन्नानाम् महीपालानाम् राजधानी अद्यतनीया एव। पर्यावरणम् मुगलवंशीयानां चक्रवर्तिनाम तथा आङ्ग्लानमपि अधिकारिणाम् केन्द्र-भूमिर्भूत्वा अधुनपि भारतीयगणराज्यस्य राजधनी पदमलङ्करोति।

पर्यावरणम् सर्वेषु प्रेक्षणीयेषु स्थानेषु बिर्लामन्दिरमिति ख्यातम् लक्ष्मीनारायण-मन्दिरं विशेषतया उल्लेखनीयम। यतः मन्दिरमिदं भारतीयचरित्रम् संस्कृतिञ्च प्रकटयति तथा विस्मयपि जनयति । भारतदेशस्य जीवननिरूपकम् संसद् भवनम् अस्ति। पर्यावरणम् उच्चतमन्याय प्रदाता अत्युच्चन्यायालयो वर्तते। पर्यावरणम् सर्वप्रधान पदमलङ्कृतवान् राष्ट्रपतिः एक विराजते। अतः भारतस्य हृदयमेव यमुनातीरे परिविस्तृता दशाधिकक्रोशमित भूभागम् आक्रम्य अवतिष्ठते।

क्रिष्टपूर्व प्रथमशतकस्य मौर्याधिपेन छिलिना छिल्लीति नामा इकितेयम् नगरी तदनन्तरं पर्यायवरणम् बभूव। पर्यावरणम् नगरीव पुराणनवोपभागाध्याम् द्विधा विभक्ता, अस्मान् परितः यानि पञ्चमहा भूतानि सन्ति तेषां समवायः एव परिसरः अथवा पर्यावरणम् इति पदेन व्यवह्रीयते।

महक
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक – 235

मम प्रियः उत्सव दीपावली

मम प्रिय : उत्सव : – दीपावलि :।

भारते विविधा : उत्सवा : प्रचलन्ति। 'दीपावलि : ' इति मम प्रिय उत्सव :। दीपोत्सव : मह्यम् अतीव रोचते। एषः धार्मिकोत्सवः अस्ति। अस्य उत्सवस्य भारतीयसंस्कृत्याम् अतीव महत्त्वपूर्णस्थानम् अस्ति। धनत्रयोदश्यां एषः धार्मिकोत्सवः अस्ति। भारतीय संस्कृत्याम् अतीव महत्त्वपूर्णस्थानम् अस्ति। सामान्यतः, उत्सव : एकस्य दिनस्य वर्तते । परम् एतस्मिन् बहवः दिनाः सन्ति। एषः उत्सवः, अश्विने कार्तिके च भवति। एतस्मिन् उत्सवे जना प्रथमदिवसे गोवत्सं सम्पूजयन्ति। धनत्रयोदश्यां सायङ्काले कुबेरपूजन्म् आचरन्ति। सर्वे विवधान् द्विष्टसुखदान् स्फोटकान् स्फोटयन्ति। निशीयसमये, सर्वत्र दीपाः प्रज्वलिताः। नयनमनोहरं दृश्यं खलु एतत्। नरकचतुर्दश्यां जना : श्रीकृष्णं पूजयन्ति। अमावस्यायां सायङ्काले लक्ष्मीनपूजनं भवति। प्रतिपदि पत्नी पति वीराजयति। यमद्वितीयायां भगिनी बन्धुं वीराजयति। अस्मिन् दिवसे जनाः मिष्टानभोजनस्य आनन्दम् अनुभवन्ति। एतेन उत्सवेन परस्पसौहार्द वर्धते। अतीव आनन्ददायकः उत्साहकरः च एवः उत्सवः।

सिमरन
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक – 290

मानव की प्रगति कभी अपने आप नहीं होती। न्याय के लक्ष्य की तरफ बढ़ाए गए हर कदम पर बलिदान, संघर्ष और तकलीफें होती हैं। लक्ष्य के लिए समर्पित व्यक्तियों का अथक परिश्रम और जुनून होता है।

– मार्टिन लूथर किंग

प्रकृतिः

प्रकृति माता सर्वेषाम्
बहूनाम अपि फलानाम्
बहूनाम् अस्ति वृक्षाणाम्
पुष्पाणाम् चापि मातेयम्।

भुम्राणां, पशूनां,
पक्षिणां च मातास्ति
जनेभ्यः जीवनं सदा
ददाति प्रकृतिः माता।।

अस्ति सा तु मनोहरी
मातृणाम् अपि मातास्ति
प्रकृतिः माता सर्वेणाम्
नमोऽस्तु ते मात्रे प्रकृत्यैः।।

सपना
बी.सी.ए. द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक - 253

श्रेष्ठता वो हुनर होता है जो अभ्यास और आदत से आता है। हम इसलिए अच्छे कर्म नहीं करते हैं कि हमारे अंदर बेहतर श्रेष्ठता है। बल्कि वो हमारे भीतर इसलिए है क्योंकि हमने अच्छे कर्म किए है। हम वो है जो बार बार करते हैं इसलिए श्रेष्ठता कोई कार्य नहीं, बल्कि एक आदत है।

विद्याधनं सर्वप्रधानम्

जडजङ्गमात्मकेऽस्मिन् विविधप्रपञ्चात्मके जगति जायमानानां जनिमतां मध्ये मनुष्य एव श्रेष्ठ इति निर्विवादम्। जनिं लब्ध्वा प्रायः सर्वे जीवाः सहजं स्वकर्म कुर्वन्तः जीवनं यापयन्ति मृतिञ्चाप्नुवन्ति किन्तु मनुष्यः दृश्यमानस्य जगतो बाह्याभ्यन्तरिकं रहस्यं ज्ञातुं सर्वदा चेष्टते। न केवलं स्वाभाविकयैव रीत्या जीवन्यापितु स्वात्मना नानाविधोपायान् विचिन्त्य जीवनं प्रकृतिप्रसूतेभ्योऽन्येभ्यः प्राणीयो विशिष्टतरं विद्यातुं प्रयतेत। सर्वेषामेव जागतिकवस्तूनां स्वसूक्ष्मदृष्टयालोचने, तेषां स्वानुकूलत्वम् प्रतिकूलत्वञ्च निश्चीय व्यवहरणे पुनर्यथाकालं सर्वान् प्रत्यौदासीन्यमुरसि निधाय जीवन्मुक्तिमार्गं प्रध्यनुगमने मनुष्ये विद्यमानं यत् तत्वं कारणत्वमेति तन्नौ विद्यातिरिक्तमन्यत् किमपि, अपि तु विद्यैव।

विद्याशब्दो विद् वेदे ज्ञाने चेति ज्ञानार्थकविद्धातोर्निष्पद्यते। वस्तुतः कस्यपि विषयस्य सम्यग्ज्ञानमेव विद्या। विद्येयं लौकिकी अलौकिकी चेत्युभयात्मिका। तत्र भौतिकविषयविष्यकं ज्ञानं यथा भवति सा लौकिकी विद्या, यथा-व्याकरणम्, साहित्यम्, विज्ञानम्, अर्थशास्त्रम्, समाजशास्त्रम्, संगीतम्, राजनीतिशास्त्रादि। यथा च विद्यया जीवस्य, प्रकृतेः, ब्राह्मणः आत्मनस्श्च ज्ञानं साधकानां मनीषिणां हृदि समुत्पद्यते सा लौकिकी ब्रह्मविद्या उपनिषद्विद्या वेति पदवाच्या भवति। धर्माधर्मयोः, सदसतीः तत्वातत्वयोश्च ज्ञानं विना विद्यया कथमति नास्ति सम्भवत्। न हि भौतिकस्यैव नाना सुखस्यापितु पारलौकिकस्यापि स्वात्मानन्दस्य दात्री विद्यैवस्ति।

निशा
बी.सी.ए. द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक - 311

पर्यावरणम्

अस्मान् परितः यानि पञ्चमहाभूतानि सन्ति तेषां समवायः एव परिसरः अ
पर्यावरणम् इति पदेन व्यवह्रीयते। इत्युक्ते मनुष्यो यत्र निवसति, यत् खादति, य
धारयति, यज्जलं पिबति यस्यं पवनस्य सेवनं करोति, तत्सर्वं पर्यावरणम्
शब्देनभिधियते। अधुना पर्यावरणस्य समस्या न केवलं भारतस्य अपितु समस्तविश्व
समस्या वर्तते। यज्जलं यश्च वायुः अद्य उपलभ्यते, तत्सर्वं मलिनं दूषितं च दृश्यते।

रसायनद्रव्याणि न निर्वहाम। जलस्त्रोतसि स्नानं न करणीयम्। सूर्यस्य ता
वाष्पस्वरूपं, शीतले सति सङ्घनीकरणे मेघस्वरूपं, वर्षामाध्यमेन जलस्वरपं धरति। क
महासागरेषु, वायुमण्डले, पृथिव्या च परिभ्रमति। जलस्य तत्परिभ्रमणं जलचक्रं कथ्यते।
अस्माकं पृथिवी स्थलशाला इव अस्ति। अलवणस्य जलस्य मुख्यं स्त्रोतः नदी, तड़ाग
हिमनदी च वर्तते। महासागराणां, समुद्राणं च जलं लावण्यं वर्तते। तस्मिन् जले सोडिय
क्लोराइड, पाचकलवणं च प्राप्यते। जलम् एकं चक्रीयसंसाधनं वर्तते।

सोनिया
बी.सी.ए. द्वितीय वर्ष
अनुक्रमांक – 262

अगर हम अच्छा लिखना चाहते है तो हमें एक सामान्य व्यक्ति की तरह रहना चाहिए। लेकिन जब बात सोचने की हो तो हमें एक विद्वान व्यक्ति की तरह सोचना चाहिए।

– अरस्तू

जीवनम् एकः स्पर्धा अस्ति

जीवनं एकः स्पर्धा अस्ति तथैव
प्रतीयते डिग्री कृते स्पर्धा कुर्वन्ति क्रीडायां
प्रतियोगिता सर्वोत्तमः एथलीटः भवितुम अपि
कार्यस्य आरम्भार्थं जनानां स्पर्धा कर्तव्या भवति

जीवनं स्पर्धा अस्ति किं भवन्तः सहमताः न भविष्यन्ति
न्यूनातिन्यूनं तथापि तथैव मम दृष्टया प्रतीयते
जनाः स्वकार्यस्थाने पदोन्नतिं प्रति स्पर्धा कुर्वन्ति प्रत्येकं
मनुष्याः अत्यन्तं प्रतिस्पर्धा कुर्वन्ति एतत् एवं प्रतीयते

इति जीवनस्य इदं सुलभं न भवति इति न संशयः एकस्य कृते
विजयं प्राप्तुं अन्यः हारति वयं सर्वे
विजेतारः भवितुम् न शक्नुमः यद्यपि केचन वदन्ति
जीवने भाग्यस्य परिस्थितेः च विशालः भागः अस्ति

परिश्रमात् प्रयत्नात् च कथ्यते यत् वयं अस्माकं योग्यं प्राप्नुम्
परन्तु जीवनं स्पर्धां इति मम विश्वासः जीवनस्य
सर्वेषु पक्षेषु जनाः सफलतां प्राप्तुं स्पर्धां कुर्वन्ति
तथा च विजेतारः विस्मयकारिणः इति खलु सत्यं प्रतीयते ।

प्रिया कुमारी
बी.एससी. (द्वितीय वर्ष)
अनुक्रमांक – 1220341030215

पत्रिका सम्बन्धी विवरण

संरक्षक : डॉ० जितेन्द्र मलिक, प्राचार्य

प्रकाशक : राजकीय कन्या महाविद्यालय, सेक्टर–14, गुरुग्राम–122001 (हरियाणा)

मुद्रक : ए० आर० आर० ग्राफिक्स, एम० जी० रोड, गुरु... गुरुग्राम

मुद्रण–अवधि : वार्षिक

स्वत्वाधिकार : राजकीय कन्या महाविद्यालय, सेक्टर–14, गुरुग्राम

नोट :

1. प्रकाशित रचनाओं के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत ... आवश्यक नहीं है।
2. सभी पद अवैतनिक हैं।
3. पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल गुरुग्राम न्यायालय के ... होंगे।

महाविद्यालय स्तर पर मेधावी छात्राओं की सूची (सत्र 2022–2023)

Sr. No.	University Roll No.	Full Name	Father Name	Name of the Programme	Total Obtained Marks	Total Marks
1.	201260230022	Neha Parashar	Nand Kishor	Bachelor of Arts	324	400
2.	201260230344	Deepti Kumari	Jaivir Singh	Bachelor of Arts	314	400
3.	201260230028	Kanishka Gahlot	Sanjay Kumar	Bachelor of Arts	313	400
4.	201260260054	Diksha Verma	Sudhir Verma	Bachelor of Arts (Hon. Economics)	417	500
5.	201260260028	Garima Chauhan	Anil Chauhan	Bachelor of Arts (Hon. Economics)	389	500
6.	201260260005	Bhumika	Parveen Dawar	Bachelor of Arts (Hon. Economics)	386	500
7.	201260310008	Deepti Prajapat	Rajesh Kumar	Bachelor of Arts (Hon. English)	409	500
8.	201260310010	Priyanshi Bedi	Alok Kumar Bedi	Bachelor of Arts (Hon. English)	403	500
9.	201260310001	Riya	Ajay Kumar	Bachelor of Arts (Hon. English)	403	500
10.	201260280008	Bhawna	Parveen Kumar	Bachelor of Arts (Hon. Hindi)	306	400
11.	201260280012	Antika	Jile Singh	Bachelor of Arts (Hon. Hindi)	306	400
12.	201260280002	Munni Kulsum	Mohammad Safikul	Bachelor of Arts (Hon. Hindi)	303	400

कॉलेज की दीवारों को हुनर के रंगों से भर रहीं छात्राएं

कन्या महाविद्यालय ने जीती ओवरऑल ट्रॉफी

एनसीआर । 14 मई 2023 www.delhi.nbt.in

फटाफट खबरें

दीक्षांत समारोह में 1000 छात्रों को मिली डिग्रियां

■ एनबीटी न्यूज गुड़गांव: सेक्टर-14 स्थित गवर्नमेंट गर्ल्स कॉलेज में शनिवार को 58 वां वार्षिक दीक्षांत समारोह धूमधाम से मना। समारोह में मुख्यअतिथि गुड़गांव यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रोफेसर दिनेश कुमार मौजूद रहे। मुख्य अतिथि व शिक्षकों से सुशोभित शोभा यात्रा बहुउद्देशीय सभागार में पहुंची। कॉलेज की विभिन्न गतिविधियों की होनहार छात्राओं ने रंग बिरंगे पुष्पों से मुख्यअतिथि का अभिनंदन किया। प्राचार्य डॉक्टर रमेश कुमार शर्मा ने महाविद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट सबके सम्मुख प्रस्तुत की। कला, वाणिज्य और विज्ञान संकाय के लगभग 1000 स्नातकों ने कुलपति के हाथों से डिग्री प्राप्त की। कॉलेज के प्रोफेसर डॉक्टर पुष्पा अहिल, डॉक्टर रितु तोमर राठी, डॉक्टर लोकेश शर्मा ने मंच संचालन किया।

गर्ल्स कॉलेज में पूर्व छात्रों का मिलन समारोह

■ एनबीटी न्यूज, गुड़गांव : सेक्टर-14 गवर्नमेंट गर्ल्स कॉलेज में पूर्व छात्रों का मिलन समारोह आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता 1969 में इस महाविद्यालय में अध्यापन कार्य करने वाले डॉ. केदार नाथ शर्मा के द्वारा की गई। कार्यक्रम का आरंभ सरस्वती पूजा व सरस्वती वंदन के साथ किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के पूर्व छात्र डीआईजी बीएसएफ सुनील कपूर, राजकीय महाविद्यालय जाटू के पूर्व प्राचार्य जगत पाल सिंह चौहान, पूर्व प्राचार्य जोगेन्द्र यादव, डॉ. एसएस बेकन, डॉ. अशोक दिवाकर समेत अन्य लोग मौजूद रहे। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. रमेश कुमार शर्मा ने सभी पूर्व छात्रों का स्वागत और अभिनंदन किया व उनके सभी सुझावों को स्वीकार करते हुए इस महाविद्यालय को उन्नति व तरक्की पर चार चांद लगाने का संकल्प लिया।